गोपीचंद भरत
गुरु गोरखनाथ
गोपी चंद
पंडित केशवप्रसाद सुदे ने आगरा बेलनगंज मुहै
ल्ला भैरव पर विद्यारत्नाकर प्रेस में छपाया ॥

रानी जी तुम हो राज कुमारि हुकम तेरा री बजाऊं॥ चार घड़ी गम खाय बोलि राजा को ल्याऊं॥ दो०। दूनी तलब चुकाय दूं बाकी तुझै इनाम॥ राजा ल्यावो बुलाय के तो परे महल में काम॥ चौ०। प्यारेजी परे महल में काम हमें तू का समझावै॥ हम को भये कलेश बोल राजा को ल्यावै॥ प्यारे जी रही उदासी छाय खड़ा क्यों देर लगावै॥ गुन भूलूंगी नाहि ज़हर में अमृत प्यावै॥ दो०॥ मन में ध्यान उपाय के बोले बचन सम्हार॥ हम नोकर सरकार के तुम हो राज कुमारि॥ चौ०। तुम हो राज कुमारि हुकम तेरारी बजाऊं॥ सूनी डयोढी छोड़ महल की कैसे जाऊं॥ रानी जी वे राजे महराज नोकरी उन की पाऊं॥ हम को देय उतार अरज़ अपनी समझाऊं॥ दोहा। मन में चिंता मति करै आन परे कछु काम॥ राजा देय उतारि के तो घर बैठे ले दाम॥ चौ०। प्यारेजी घर बैठे ले दाम नोकरी भेजूं तेरे तो को छोड़ नाहि रहो तुम नोकर मेरे॥ प्यारेजी राजा द्यो समझाय हुकम मेरा ना फेरे॥ बहुत करूंगी प्यार रहो डयोढी के नेरे॥ दोहा। राजा तुम्हारे देश में हस्ती घूमें द्वार॥ अन हद बाजे बाजते राजों के दरबार॥ चौ०। रानी जी राजों के दरबार अरज़ एक सुनो हमारी॥ कैसे ल्याऊं बोलि भरी सारी सरदारी॥ रानी जी बैठे हैं सरदार बड़े २ [illegible]त्तरधारी॥ हो रही जैजै कार नाचतीं पातरि सारी॥ दो०। रात [illegible]वाव हम को भये परै न चित को चैन॥ बात सुनो मेरे रवाव की [illegible]। हो गई वैरनि रैन॥ चौ०। प्यारेजी होगई वैरनि रैन कटी नाह [illegible]म से काटी॥ मन में भये कलेश पलंग की टूटी पाटी॥ प्यारे जी न [illegible]यनी रही वल खाय गुथी रेशम की आटी॥ विगड़ गये सिंगार [illegible]सीस की चुंदरी फाटी॥ दोहा। रानी के सुनि बचन को धरे कुंवर [illegible]न॥ सूनी डयोढी छोड के तो चले अभैसिंह ज्वान॥ चौ० [illegible]चले अभैसिंह [illegible]ट राजा के आये॥ कर जोरै ए

क पांव दूर से अरज़ सुनाये॥ राजा जी आन पड़े कोई काम महल में हाल बुलाये॥ चलो हमारे साथ बचन ऐसे समझाये॥ दो०। सुनत बचन राजा उठे जलदी न्याव चुकाय॥ नीर गरम धरवाय के तो सोंधा लिया मिलाय॥ चौ०॥ प्यारे जी सोंधा लिया मिलाय नीर में नीर समोये॥ चंदन चौकी डारि कुवर ने न्हान संजोये॥ प्यारे जी कंचन बने शरीर नीर में मल कर धोये॥ लई सुमरनी हाथ रतन नग लाल पिरोये॥ दोहा। राज तुम्हारा देश में कौन करैगा होड़॥ हम आये रणबास की सूनी ड्योढी छोड़ चौ० राजा जी सूनी ड्योढी छोड़ अरज़ एक सुनो हमारी॥ सूना है रणबास खुले हैं पौल दुवारी॥ राजा जी दूती फिरैं अनेक सोच मन में है भारी॥ कहो महल को जायं कहो चलें संग तुम्हारी॥ दो० हँस के बचन सुनावते सुनो अभै सिंह बात॥ नेक ज़रा ग[illegible] खाय जा तो चलें तुम्हारे साथ॥ चौ० प्यारे जी चलें तुम्हारे साथ नेराजी क्यों घबरावै॥ धरि सूरज को ध्यान [illegible]गन हो तिलक लगावै॥ प्यारे जी आभूषण सिंगार रहस के अधिक बनाये॥ दरपन में मुख देख नाम जब हिरदें लाये॥ दोहा। तुम राजा महाराज हो क्या तुम को संदेह॥ हम नोकर सरकार के तो मेरी अ[illegible] रज़ सुनि लेय॥ चौ०॥ राजा जी मेरी अरज़ सुनि लेउ नोकरी ऊं दूनी॥ हमें बड़ा अब सोच पड़ी है ड्योढी सूनी॥ राजा जी हु[illegible] क़म करो महाराज मगाऊं हाथी खूनी॥ करो पाल की त्यार ज[illegible] नग हीरा चुन्नी॥ दोहा॥ सुनत बचन राजा उठे जल्दी न्याव चुकाय॥ हौदा रतन जड़ाव का तो झोटा गुरमट खाय॥ प्रभु जी झोटा गुरमट खाय चढ़े हाथी अंबारी॥ बोलत चले नक़ीब क[illegible] री महलन की त्यारी॥ प्रभु जी उतरे ड्योढी जाय जुरी स[illegible] रदारी॥ राजा महलों गये ख्वाई [illegible] ज कुमारी॥ [illegible]

रानी रतन कुमरि का राजा गोपी चंद से दोहा ॥ रतन कुंवरि रानी खड़ी सुबरन झारी हाथ ॥ पग धोये मल मीड़ के अंग न फूली समात ॥ चौ० ॥ प्रभुजी फूली अंग न समात करी भोजन की त्यारी ॥ छत्तीसों पकवान भरी सुबरन की थारी ॥ प्रभुजी ठाढ़ी करूं वियार सुनो एक अरज़ हमारी ॥ भोजन जीवो महा राज तेरी सूरत परवारी ॥ दोहा ॥ पहलो ग्रास मुख में दियो दूजो लियो उठाय ॥ पांच ग्रास मुख में दिये तो थाल दियो सरकाय ॥ चौ० ॥ प्रभुजी थाल दियो सरकाय सोच मन में नहिं कीये ॥ सुवरन झारी हाथ रहस गंगा जल पीये ॥ प्रभुजी नागर पान मंगायकु कुंवर मुख बीड़ा दीये ॥ दरपन में मुख देख नाम जब हरि के लीये ॥ दो० कर जोरें अरज़ी करै वो पतिभरता नारि ॥ आज रहो रणवास में तो सुनि मेरे भरतार ॥ चौ० ॥ राजा जी सुन मेरे भरतार सदा चरणन की दासी ॥ मन के मिटि गये सोच रही ना हमें उदासी ॥ राजा जी दूंगी पलंग नवाय सेज फूलन की खासी ॥ पौढ़ो सुख की नींद नगर धारा के वासी ॥ जवाब माता का गोपी चंद से ॥

दोहा ॥ मैंनावती माता कहै कंचन बने शरीर ॥ सूरत देखी लाल की तो ढरे नैंन से नीर ॥ चौ० ॥ प्रभु जी ढरे नैंन से नीर भयो दुख अगम अपारा ॥ रोवै जार वे ज़ार हमें गोपी चंद प्यारा ॥ प्रभुजी उ

मरि करी कुछ नाहिं काल के बहुत दुधारा ॥ सावत रहै न कोइ कालने सब को मारा ॥ दो०। राज हमारा देश में नाहिं किसी से पोच ॥ सत्य हमें बतलाय दे सो तुम को क्या अब सोच ॥ चौ० माता जी तुम को क्या अब सोच कहो ना मन की बानी ॥ रोवै जार वेजार भरे नैंनन में पानी ॥ माता जी हल्ली घूमें हार धरें सोलह सै रानी ॥ क्या दुख व्याप्यो तोहि तैने क्या मन में जानी ॥+ दो०। चौ महले माता खड़ी बोली बच्चन सम्हार ॥ शुभ घड़ी पैदा भयो तू मेरें अवतार ॥ चौ। बेटा जी तू मेरे अवतार भयो गोपी चंद राजा ॥ कंचन काया बनी पांव तेरे पदम बिराजा। बेटा जी हाल फ़क़ीरी लेउ करो मति आप अकाजा ॥ जोगी हो मेरे लाल काल तेरे सिर पर गाजा ॥ दो०। एक तन को परिवार है ऐसो लग्यो बियोग ॥ कुटम लजाई होयगी तो कैसे साधूं जोग ॥ चौ०। माता जी कैसे साधूं जोग दाग़ मेरे कुल को आवै ॥ इक छत मेरा राज सबी परजा दुख पावै ॥ माता जी कद की वैरनि भई हमें तू जोग बतावै ॥ बोले बच्चन कठोर नाहक में लोग हंसावै ॥ दो०। मतलब को संसार है ढलती फिरती छांह ॥ जोगी हो रमजायँगे तो लोग हंसेंगे नाह ॥ चौ। बेटा जी लोग हंसेंगे नाहिं मेरे गोपी चंद प्यारे ॥ सूरत पै कुरुवान मेरे नैनन के तारे ॥ बेटा जी लेउ फ़क़ीरी हाल रहो दिल माहिं करारे ॥ छोड़ राज का मोह बच्चन तू मान हमारे ॥ इकछत मेरा राज है इक तन का परिवार ॥ कैसे जाऊं छोड़ के सो घर सोलह सै नारि ॥ चौ० ॥ माता जी घर सोलह सै नारि इन्हें मैं कहां विसारूं ॥ हम को दें हि सराप जोग मैं कैसे धारूं ॥ माता जी हम राजा महाराज किसी के नाहि सहारूं ॥ उठेंगे राज के तेज गुस्सा में कैसे मारूं ॥ दो० मन मारो तन बस करो सुन गोपी चंद लाल ॥ काया अ-

मर हो जायगी तो लेउ फ़कीरी हाल ॥ चौ० । बेटा जी लेउ फ़कीरी हाल मरी सोलह सौ रानी ॥ सिर पर डोलै काल फिरै तेरी मौत निसानी ॥ बेटा जी तेरे पिता के राज कही मेरी एक न मानी ॥ हुए भसम के ढेर बरस गये ऊपर पानी ॥ दो० ॥ सदा किसी की ना रही ये जग में व्योहार ॥ भव सागर में आय के बह्यो जात संसार ॥ चौ० । माता जी बह्यो जात संसार जगत सपने की माया ॥ मस्तक मेरा भाग रूप करतार बनाया ॥ माता जी राज करन दे मोहि अमर रहती नहिं काया ॥ रहै राम का नाम पार जिन का नहिं पाया ॥ दो० एबेटा तू बावरा सुनि माता की बात ॥ दिना चार की चांदनी फेरि अंध्यारी रात ॥ चौ० । बेटा जी फेर अंध्यारी रात लोभ खांडे की धारा ॥ या से बचा न कोय लोभ ने सब को मारा ॥ बेटा जी जिन ने त्यागे लोभ उतर गये पैली पारा ॥ छोड़ राज का मोह वचन तू मान हमारा ॥ दो० । एक लख हाथी घूमता पांच लाख असवार ॥ कैसें इन्हें बिसार दूं नौ कन्या सवा हज़ार ॥ चौ० । माता जी कन्या सवा हज़ार व्याह इन के नहिं कीये ॥ धृक जीवन धन माल सदा जग में नहिं जीये ॥ माता जी जा दिन जनमे कुवर घोल विष क्यों ना दीये ॥ हमें बताओ जोग बंधु मैं तेरे हीये ॥ दो० । बोली बचन संभार के कह मैनावती माय ॥ जा दिन तू पैदा भयो कंचन दिये लुटाय ॥ चौ० ॥ बेटा जी कंचन दिये लुटाय सोच मन में नहिं ल्याई ॥ नौबत बाजी द्वार और तेरी बटी बधाई ॥ बेटा जी गज हस्ती के दान भाट द्विज दिये अघाई ॥ जोगी होजा मेरे लाल मौत तेरे सिर पर आई ॥ दोहा । आया है सो जायगा क्या राजा क्या रंक ॥ जस बाक़ी रह जायगा तो बाकी रहै कलंक ॥ चौ० । माता जी बाकी रहै कलंक हमें तू जोग बतावै ॥ गद्दी सूनी करै सोच मन में नहिं ल्यावै ॥ माता जी करम लिखा है राज आज तूं भसम रमावै ॥ जोगी होइ रमिजा

यें कहा पीछे सुख पावै ॥ दो॰। काया कारण जोग ले भसम रमा-
ले अंग ॥ माया मोह सब त्याग के तो ऐसे बनो विहंग ॥ चौ॰। बेटा
जी ऐसे बनो विहंग सोच मन में मति लावो ॥ चौरासी हैं सिद्ध सबें
में दास कहावो ॥ बेटा जी गुरु की सेवा जोग चरण में सीस नवावो
रहै तुम्हारो नाम बड़ाई ऐसी पावो ॥ दो॰। जनमत ही विधना दिये
मन कर बहुत कठोर ॥ अब तू जोग बतावती बाला तन की ओर
चौ॰। माता जी बाला तन की ओर ज्योंही सब ख्याल गमाई ॥ तेरै
नाहिं सुख भये हमें तुम जोग बनाई ॥ माता जी कंचन बने शरीर
काहे को भसम रमाई ॥ सब छोड़ूं परिवार कहो किस कारण भाई ॥
दो॰। हमें अंदेशा लागि रहा सोच रही दिन रात ॥ काल बली शिर पे
बड़ा तो फांसी ले रह्यो हाथ ॥ चौ॰। बेटा जी फांसी ले रह्यो हाथ ज
गत देखत के नाते ॥ क्या राजा क्या रंक रहे ना बीस भुजा ते। बेटा
जी जग सुपनो सो जानि सोच मन में क्या लाते ॥ रहै राम का नाम
पार जिन का नहिं पाते ॥ दो॰॥ गोपी चंद राजा खड़े दोऊ कर जो
रै हाथ ॥ मेरी अरज़ सुनि लीजिये नो ऐसी कहमति बात ॥ चौ॰।
माता जी ऐसी कहो मति बात हमें सिर गद्दी सोहै ॥ हम से बहुत म
लूक जगत में दूजा को है ॥ माता जी राज तपे चौ खंड सीस कुलका
नि बड़ी है ॥ जोगी वे हो जायें जिने घर कोई नही है ॥ दो॰। तू बेटा
भूल्यो फिरै सत की माला फेर ॥ राज किये तेरे बाप ने भये भसम
के ढेर ॥ चौ॰। बेटा जी भये भसम के ढेर बचे वे नाहिं बचाये ॥
जितने राजा भये काल ने सब ही खाये ॥ बेटा जी जितने त्यागे
लोभ सोच मन में नाहिं लाये ॥ मिटि गये आवागमन फेर जग
में नहिं आये ॥ दो॰॥ कैसे जोगी मैं बनूं करूं कौन सा भेस। ह
म को सत्य बताय दे तो तुमने दिया उपदेस ॥ चौ॰। माता जी
तुमने दिया उपदेस सोई मेरे मन भाया ॥ कौन गुरू पर जाउं अ

मर करदे मेरी काया ॥ माताजी हमें बतायो ज्ञान जोग मारग नहिं पाया ॥ तेरा बचन मेरा जोग ध्यान जैसे अमृत पाया ॥ ॥ दो० । मन दिलगीरी मत करो सुन गोपी चंद पूत ॥ सब सांसे मिट जायेंगे तो जब देखो अवधूत ॥ चौ० ॥ बेटाजी जब देखो अवधूत बदन तेरा होय निरोगी ॥ प्रेम गुफा में बसे एक जालंधर जोगी ॥ बेटा जी उनकी सेवा करो अमर तेरी काया होगी ॥ तेरे मामा के गुरू बड़न जहां बैठे वियोगी ॥ दोहा। माता के सुन बचन को मन में उठी तरंग ॥ अंग भभूत रमाय के तो ऐसे बने विहंग ॥ चौ० ॥ प्रभुजी ऐसे बने विहंग राज के तजे हैं समाजा ॥ तजे तख्त और छत्र तजी सब कुल की लाजा ॥ प्रभुजी महलों भया वियोग बजे ये अनहद बाजा ॥ रोय उठे रनवास चले गोपी चंद राजा ॥

दोहा ॥ प्रजा रूप को निरखती सखी छती सो जान ॥ सोग भयो रनवास में तो माता मीड़े हाथ ॥ चौ० प्रभुजी माता मीड़े हाथ भई मैंना खुसियाली ॥ रोवत सब बन राय सोग पड्यो डाली डाली ॥ प्रभु जी रोवत जार बेजार खड़ी सब चित्तर भाली ॥ रोवत सब दरवार लगी केरमों की नाली ॥ दो० । सब को सीस नवावते चले गुरून के पास ॥ माता से अरजी करैं तो अब क्यों भई उदास ॥ चौ० ॥ माता जी अब क्यों भई उदास चलें हम गुरु के पासा ॥ जो पूरे गुरु

होंय करैं मेरी पूरन आसा॥ माता जी होय प्रसन्न बर देहिं मिटैं मेरे संकट सांसा॥ इतनी कह कर चले किये जंगल में बासा॥+
दोहा॥ भेटे राजा भरतरी मन में भये उदास॥ तुम क्यों आये छोड़ के सो मेरे गुरु के पास॥ चौ०॥ प्यारे जी मेरे गुरु गुरु के पास कहो तुम कैसे आये॥ क्या दुख व्यापे तोहि सोच मन में नहिं लाये प्यारे जी घर सोलह से नारि सोच मन में नहिं लाये॥ जा अपने घर बैठ आज तोहि किन बहकाये॥ जबाब गोपी चंद का राजा भरतरी से॥ दोहा॥ तू मामा मैं भानजा मेरी अरज़ सुनि लेव॥ चेला हमें कराय दे मैं करूं गुरुन की सेव॥ चौ०॥ मामा जी करूं गुरुन की सेव और चेला से दूनी॥ दिन को दावूं पांव रात को डारूं धूनी॥ मामा जी राज पाट दिये छोड़ तजे मैंने हाथी खूनी॥ घर सोलह से नारि छोड कर करीं विहूनी॥ दो०। गोपी चंद को देख के कोमल जिन के गात॥ हीयो आयो उमंग के तो सुनी कुवर की बात॥ चौ०॥ प्रभु जी सुनी कुवर की बात नैन से आयो पानी॥ छाती लियो लगाय सुनाई अम्रत वानी॥ प्यारे जी क्यों छोड़े है राज घरे सोलह सै रानी॥ जोग बड़ा जंजाल तैंनें क्या मन में ठानी॥ दो॥ मन मारूं तन बस करूं रहूं गुरुन के पास॥ चेला हमें कराय दे तो गही तुम्हारी आस॥ चौ०॥ मामा जी गही तुम्हारी आस बहुत कर तुम पर आये॥ अब क्या जायें निरास जोग मेरे मन भाये॥ मामा जी माय दिया उपदेश सोच मन में नहि लाये॥ सब से त्यागे मोह गुरुन से ध्यान लगाये॥ दोहा॥ बोले ज्ञान विचार के देखि कुवर के गात॥ जा अपने घर बैठिये तो सुनो कुवर मेरी बात॥ चौ०॥ प्यारे जी सुनो कुवर मेरी बात फिरो क्यों मति के हीना॥ सब से त्यागे मोह जोग में क्या चित दीना॥ प्यारे जी सीख बिरानी मान गज़ब तैंने ऐसा कीना

जोग सधन का नाहिं जोग तैंने किस पर लीना ॥ दो०। मैनावंती माय ने हमें दिया उपदेस ॥ वा दिन से निश्चै भई तो कर जोगी का भेस ॥ चौ०। मामा जी कर जोगी का भेस भये बन बन में डोले ॥ खाये बन फल फूल तृषा ने दिये रुकोले ॥ मामा जी भ्रमते फिरे उजाड़ पैरों में पड़ गये छाले ॥ अब देखे गुरु द्वार आन कर तुम से बोले ॥ दो० इतनी सुन कर भरतरी भरे नैंन में नीर ॥ लिये कुवर जी पूछि के तो बहुत बंधाई धीर ॥ चौ० प्रभु जी बहुत बंधाई धीर कुवर गोदी में लीये ॥ मुख पर फेरे हाथ प्यार बहुते रे कीये ॥ प्यारे जी कद की बैरन भई बहुत दुख तुम को दीये ॥ पूत नहीं दो च्यारि वंधु मैं तेरे ही ये ॥ दो०। लाड़ चाव कूं छोड़ दे राखो मेरी टेक ॥ गुरु भाई कर ली जिये तो मिले भेक से भेक चौ०॥ मामा जी मिले भेष में भेष खड़ा मैं अरज लगाऊं ॥ ले चल गुरु के पास गुरु न को सीस नवाऊं ॥ प्यारे जी जो गुर होंय दयाल गुरुन की आज्ञा पाऊं ॥ सेवा करूं बनाय सोच मन में नहिं लाऊं ॥ दो०॥ कैसे गुरु पर ले चलूं का समझावै मोहि वे जोगी अब धूत हैं तो भसम करेंगे तोहि ॥ चौ०॥ प्यारे जी भसम करेंगे तोहि उठे तेरे तन में ज्वाला ॥ रोय मरै तेरी माय जिन्हों ने दुख से पाला ॥ प्यारे जी कहा हमारा मान भया है का मतवाला ॥ कर धारा का राज बगद घर जा ओ बाला ॥ दो०। कर जोरैं अरज़ी करूं लगा गुरुन से ध्यान ॥ कै सेवा गुरु की करूं ना तर तजूं पिरान ॥ चौ०। मामा जी ना तर तजूं पिरान यही मेरे मन भाई ॥ तुम को देंहि सराप करै मेरी लोग हंसाई ॥ मामा जी ऐंसे भये कठोर दया तो हि नेक न आई ॥ कहो गुरुन से जाय कहा तुम देर लगाई ॥ दोहा। राजा जोगी अगिन-जल इन की उलटी रीति ॥ मया मोह जिन के नहीं थोड़ी पालें प्री

ति ॥ चौ॰। प्यारे जी थोड़ी पालें प्रीति हमें तुम क्या समझाने ॥ छोड़ दिये घरबार फेर नहिं प्रीति लगाते ॥ प्यारे जी घर घर अलख जगाय गुरुन के टुकड़े पाते ॥ मन दिलगीरी होय छोड़ उनको भी जाते ॥ दोहा। नैंनन भर२ रोवते गये बच्छ मुरझाय। मामा के सुनि वचन को तो गिरे तमारो खाय ॥ चौ॰। प्रभुजी गिरे तमारो खाय नैंन से आये पानी ॥ रोवत ज़ार बेजार भया मैं कों बैरानी ॥ प्यारे जी दोऊ करजोरे हाथ सुनाई अमृत बानी ॥ मारे ऐसो भयो कठोर मेरी तैंने एक न मानी ॥ बात गोपीचंदने कही भरतरी से ॥ जब गोपीचंद को भरतरी ने छाती से लगा लिया फिर भरतरी जी बोले कि पहले मैं गुरुजी की आज्ञा ले आऊं ॥ तब तीन वार गये गुरुजी के पास कर पुतली लेकर चौथे गोपीचंद को ले गये ॥ अवाज दीनी गुफ़ा में से तब गुरुजी ने कही बच्चा कौन है। भरतरी जी बोले कि राजा भरतरी है ॥ जब गुरुजी बोले कि गोपीचंद तो अमर ही है तब भरतरी बोले कि गुरुजी अमर करोगे तो अमर हैं ॥ जब गोपीचंद को बरदान दिया गुरुजीने कि बच्चा टलेगी बलाय जीवै गोपीचंद भरतरी ॥ जवाब गोपीचंद का गुरुजी से दो॰ शुभ घड़ी घर से चले लगा गुरुन से नेह ॥ जा चेला घर आपने अमर भई तेरी देह ॥ चौ॰। चेला जी अमर भई तेरी देह मेरे गोपीचंद प्यारे ॥ कर धारा को राज रहो मत संग हमारे ॥ प्यारे जी हम जोगी अब धूत रहैं दुनियां से न्यारे ॥ तुम राजा महाराज फिरो घर घर मारे ॥ दोहा। तुम गुरु दीन दयाल हो कोन करै थारी होड़। शरण गही तेरी आय के तो राज पाट दिये छोड़ ॥ चौ॰। गुरुजी राज पाट दिये छोड़ चरण तुम्हरे चित दीना ॥ चेला करने मोहि फिरूं मैं जग से हीना ॥ गुरुजी धारा नगर सुथान तजा मैंने श

हरनगीना ॥ घर सोलह से नारि मोह जिन सूना कीना ॥ दो॰। तू चेला भूल्यो फिरै मान हमारी सीख ॥ जोगी होय क्या लेयगा तो घर घर मांगो भीख ॥ चौ॰। चेला जी घर घर मांगो भीख धूप में अंग पसीजै ॥ राज घरों के पूत जोग ऐसे नहिं लीजै ॥ प्यारे जी अपने घर जा बैठ राज धारा का कीजै ॥ सब से राखो मोह चरण गुरु के चित दीजै ॥ दो॰। जा दिन घर से हम चले धर जोगी का भेस ॥ तुम चरणों की आस है तो ऐसा कर उपदेस ॥ चौ॰॥ गुरु जी ऐसा कर उपदेश जगत से प्रीति न लागे ॥ रहूं सदा लवलीन भरम मेरा सब भागे ॥ गुरु जी ऐसा दीजै ज्ञान प्रीति हम से सब त्यागे ॥ सेवा करूं बनाय रहों मैं तुम्हरे आगे ॥ दो॰। कर कर भगवां कापड़ा धरि जोगी का भेक ॥ जोग जुगति जानी नहीं तो ऐसे फिरैं अनेक ॥ चौ॰। चेला जी ऐसे फिरैं अनेक बने वे डोलें मौनी। कर ऊपर को हाथ बड़े वे डोल तखूनी ॥ चेला जी बहुतक ऐसे फिरैं नारि वे छलन बिरानी ॥ कोई साहब के लाल बसे जिभ्या पर ज्ञानी दो॰। जोग जुगति की रीति है सो हम को देउ बताय ॥ झोली दे मेरे हाथ में तो अंग भभूत रमाय ॥ चौ॰। गुरु जी अंग भभूत रमाय कही सो हम ने जानी ॥ रहूं तुम्हारे साथ करूं धूनी अरु पानी ॥ गुरु जी ले कर अलख जगाय सुनें महलन की रानी ॥ जल दी भेजैं भीख सुनाऊं अमृत बानी ॥ दोहा किन दीनो बहकाय के क्या तोहि लगा वियोग ॥ राज तपे चौखंड में तो क्यों साधै है जोग चौ॰। चेला जी क्यों साधै है जोग तेरे सिर छत्तर सोहै ॥ कंचन बने शरीर देखि मन सब का मोहै ॥ चेला जी तुम से और मल्हूक जगत में दूजा को है ॥ अमर भई तेरी देह नाहक मैं जोगी हो है।

जवाब भरतरी का गुरु जी से दोहा ॥ बोले राजा भरतरी सुनि गुरु गोरख देव। सब सांसे मिट जायंगे चेला कर क्यों न लेव।

चौ०। गुरु जी चेला करक्यों न लेव अमर कर दीनी काया॥ अब ना रही उधार बचन गुरु जे फ़रमाया॥ गुरु जी तुम चरणों का-ध्यान करन जी के मन भाया॥ सेवा करै बनाय बहुत आसा कर आया॥ दो०। सूरत जिन की मोहिनी कोमल जिन के गात॥ इन पर जोग सधै नहीं तो सुन चेला मेरी बात॥ चौ०। प्यारे जी सुन चेला मेरी बात फिरै क्यों मति का हारा॥ कुवर करै है राज जोग खांडे की धारा॥ प्यारे जी क्या जानेगा सार फिरैगा घर घर मारा॥ दे इन को समझाय रहै घर बैठ विचारा॥ दो०। तुम गुरु दीन दयाल हो कुवर करै थारी आस॥ यों जाने का है नहीं रहै तुम्हारे पास॥ चौ०॥ गुरु जी रहै तुम्हारे पास करो इन का निसतारा॥ जो पूरे गुरु होंय फिरै क्यों घर घर मारा॥ गुरु जी तुम चरणों का ध्यान रहै दिल माहिं करारा॥ चार खूंट में रहा न हीं कोई अटकन हारा॥ दोहा॥ जे चेला जाता नहीं जोग रहै मन मान॥ लीनी करद मगाय के तो फारन लागे कान॥ चौबो० प्रभुजी फारन लागे कान कुवर पर करद चलाई॥ छुटी दूध की धार दूसरे सुरखी आई॥ प्रभुजी दीनी मुद्रा डारि अंग भभूत रमाई॥ सिर पर धरि दियो हाथ कुवर की करी बड़ाई॥ दोहा॥ कर जोरें अरजी करै अच्छा मोकूं देह॥ ऐसा ज्ञान बताय दे मैं तजूं जगत से नेह॥ चौ०। गुरु जी तजूं जगत से नेह रहस के नाद बजाऊं॥ चौरासी हैं सिद्ध सबन में दास कहाऊं॥ गुरु जी तुम्हरी आज्ञा पाय महल में अलख जगाऊं॥ ऐसे बोलूं बचन भीख महलन से लाऊं॥ दो०। चार खूंट रमते रहो गुरु से राखो ध्यान घर सोलह से नारि हैं तो माता कर कर जान॥ चौ०। चेला जी माता कर कर जान भीख महलन से लावो॥ झोली ले लो हाथ जाय वहां नाद बजावो॥ चेला जी जो मन माने राज बैठ कर हुकम च-

लावो॥ जोमन माने जोग गुरुन का ध्यान लगावो॥ दो॰। कांधे पर झोली धरी अंग भभूत रमाय॥ गोपी चंद राजा चले तो गुरु-की आज्ञा पाय॥ चौ॰। प्रभुजी गुरु की आज्ञा पाय चले धारा में आये॥ ड्योढ़ी पहुंचे जाय कुवर ने अलख जगाये॥ प्यारेजी गुरु के लीये नाम रहस के नाद वजाये॥ भिक्षा भेजो माय टेर कर शबद सुनाये॥ जबाव बांदी का गोपी चंद राजा से।

दोहा॥ खबरि भई रणवास में जोगी आये द्वार॥ भिक्षा ले करके चली तो बांदी राज कुवार॥ चौ॰। प्रभुजी बांदी राज कुमारि चली ड्योढ़ी पर आई॥ ले जोगी के भीख दूर से अरज़-लगाई॥ प्रभुजी गोपी चंद को देखि बहुत मन में मुरझाई॥ ढरे नैंन से नीर लटक धरती पर जाई॥ दोहा हंसि के बचन सुनावते सुनि बांदी मेरी बात॥ मन दिलगीरी मति करो तो खु-शी रहो दिन रात॥ चौ॰॥ बांदी री खुशी रहो दिन रात आज क्यों भई दिवानी॥ रोवै जार बेजार भरे नैंनन में पानी॥ बांदी री कहो महल में जाय जहां सोलह सै रानी॥ भिक्षा भेजो माय सुनावो अमृत बानी॥ दो॰। कर जोरै अरज़ी करै ठाढ़ी एक ही पाय॥ आप चलो रणवास में तो मोपै कही न जाय॥ चौ॰॥ राजा जी मोपै कही न जाय कुवर ने कीनी फेरी॥ रानी बहुत रिसाय अंत में उन की चेरी॥ राजा जी तुम राजा महा-

राज अरज़ तुम सुनिये मेरी ॥ कहने आवै लाज कुवर मैं बांदी तेरी ॥ दो०। तू बांदी रणबास की मत कर सोच विचार ॥ कहौ महल में जाय के तो जोगी ठाड़े द्वार ॥ चौ०। बांदीरी जोगी ठाड़े द्वार महल में जा समझावो ॥ भिक्षा भेजो माय खड़ी क्यों देर लगावो ॥ बांदीरी कहो रानी से जाय दरशा जोगी का पावो। नाहिं तुरत रमि जायं फेर पीछे पछितावो ॥ दो०। बांदी महलों आवती बोली बचन सम्हार ॥ सात सखिन के झुंड में तो बैठी राज कुवार ॥ चौ०। प्रभुजी बैठी राज कुमारि अरज़ अपनी समझावै ॥ गोपी चंद भरतार द्वार पर अलख जगावै ॥ रानी जी भिक्षा लेकर चलो बहुत कर तुम्हैं बुलावै ॥ दरशन देखो जाय बख़्त ऐसा नहिं पावै ॥ जवाब रानी का गोपी चंद

से राग विहाग में ॥ काहे को म्हारे आवैंगे बालम क्यौं बहकावै बांदी मोहि ॥ टेक ॥ हम निरभागिन त्याग दई पिया ने। पिया के जिया में मेरा जिया रे ॥ सूनी सेज तलफ़ती छोड़ी। ऐसा निडर किया रे ॥ जा दिन से पिया जोग लिया है सुपना में दरशन दिया रे ॥ लछमन जो कुछ लिखी है विधाना स्वपना में सुख सम जिया रे ॥ दोहा ॥ बांदी बचन सुनावती नैन रहे जल छाय ॥ तेरे तो इतबार ना मैं कहती समझाय ॥ चौ०। रानी जी मैं कहती समझाय कुंवर ड्योढ़ी पर आये ॥ झोली सो

है हाथ खड़े हैं बदन छिपाये॥ रानी जी तुम हो राजकुमारि-देख मेरा जी घबरावै॥ राज घरों के पूत जोग तिन के मन भावै-दोहा एक अमली के पात में दो जन रहे समाय॥ मन फाटे दिल ऊछटे पलिका पै न रहाय॥ दो॰। बांदी के सुनि बचन कूं ब्याकुल भये शरीर॥ सब काया मुरझागई तो ढरे नैंन से नीर। चौबो॰ प्रभुजी ढरे नैंन से नीर सबी काया मुरझाई॥ रोवै जार बेजार करी कोई कुबुधि कमाई॥ प्रभुजी ड्योढ़ी पहुंची आय कुवर से अरज़ लगाई॥ सुख में साधे जोग कहो तो हि क्या मन भाई॥ दोहा संपति बिपति बिचारि के ज्यों पाछि तावे कूर मासा घटै न तिल वढै सो लेख लिखे अंकूर॥ चौ॰। रानी जी लेख लिखे अंकूर मिटेंगे नाहिं मिटाये॥ माय दिया उपदेश प्र-जोग मैं न उनसे पाये। रानी जी सब से त्यागे मोह सोच मन में नाहिं ल्याये॥ झोली लेली हाथ भीख तेरे मांगन आये। दो॰ हम रानी रणबास की तुम सिर के सिरताज॥ जा दिन से जोगी भये तो भावत नाहीं नाज॥ चौ॰ राजा जी भावत नाहीं नाज भई मेरे मन दिलगीरी॥ राज पाट दिये त्याग लई तन आप फ़की री॥ राजा जी सूनी दीखै सेज छोड़ दी अरध शरीरी॥ तुम बिन व्याकुल नैंन तजी मैंने वहुत अमीरी॥ दो॰। राज तपै चौ खंड में जोग लिया मैंने आज॥ मन दिलगीरी क्या करो तो बैठी भोगो राज॥ चौ॰ रानी जी बैठी भोगो राज माल के भरे हैं खज़ाने हस्ती घूमैं द्वार बजें तेरे नौबत खाने॥ रानी जी इक छत्र बरते राज देश क्या हुए बिराने॥ हमरे करम में जोग सोई मेरे मन माने॥ दो॰। जा दिन बांधे सेहरा जब क्यों न लिये जोग॥ राज घरों की ब्याहि के तो हम को दियो वियोग। चौ॰ राजा जी हम को दिये वियोग महल में भई उदासी॥ राजपाट दिये छोड़

हुये जंगल के बासी ॥ राजा जी भैं में सोना होय सेज तुम छोड़ी
खासी ॥ कर धारा को राज करो मति अपनी हांसी ॥ दोहा ॥
राज पाट सब तजि दिये हमें गुरुन की आन ॥ भिक्षा बेग मंगाय
दे तो जोग रहै मन मान ॥ चौबोला ॥ रानी जी जोग रहै मन मान
जगत सपना मैंने जाने ॥ सब से त्यागे मोह बचन माता के
माने ॥ रानी जी गुरु की सेवा करी बचन उन के सब माने ॥ +
हम उत्तर तुम माय नाहक में झगड़ा ठाने ॥ जबाब रानी रत
न कुमरि का राजा गोपी चंद से राग विहाग ॥ पिया तोहि
जान न दूंगी । बैठो मन समझाय ॥ टेक ॥ तुम जावो हम किस
पर छोड़ी रोवत रैंन विहाय ॥ सोलह सौ नारि दिसारि चले हो
ठाढे हौं भसम रमाय ॥ धरक धरक मेरा करत करेजा नैंन रहै
झरलाय ॥ सोच समझ घर बैठ रहोगे सेवा करैं बनाय ॥ लछ
मन राम सुमिरि गुण गावै दीजै दरश दिखाय ॥ जबाब गो
पी चंद का रानी रतन कुमारि से ॥ राग होली ॥ नारि अ
ब ख्याल परो मति मेरे । मोहि जाना गुरुन के डेरे ॥ टेक ॥ बैठी रा
ज करो महलन में माल ख़जाने तेरे ॥ हम करमन में लिखी है
फ़कीरी तो वाको कौन निबेरे ॥ फ़ौजन के घर सजे हैं रिसाले
राज़ तपै चौफेरे ॥ नौकर चाकर सब हैं तेरे वे का हुकम तेरा
गेरे ॥ बार बार समझावति तिरिया हम को होत अबेरे ॥ माता
के बचन से लई है फ़कीरी तू वहां पर करियो दान सबेरे ॥ लछ
मन राम सुमिरि गुन गावै आय गये दिन नेरे ॥ दोहा ॥ राजा
के सुनि बचन को हिरदे रोस भरे ॥ धरक धरक छतियां करै
तो नैंनन नीर ढरे ॥ चौबोला ॥ प्रभु जी ढरे नैंन से नीर उमं
ग कर आवे छाती ॥ या सुख बोलो माय अकल तेरी रही क्या जा
ती ॥ राजा जी तुम सिर के सिरदार तेरी हम नारि कहाती ॥ सुख

मैं साधे जोग नहीं मेरी पार बसाती ॥ दोहा। राज तपे की नारि हो जोग धरे की माय ॥ पुत्तर करके जानिये तो जोग सुफल हो जाय ॥ चौबो०। रानी जी जोग सुफल है जाय धरम की लागो मता ॥ दिल में धीरज बांधि जोही कछु लिखी है विधाता ॥ रानी जी हम को होन ख़बेर भीख तुम भेजो दाता ॥ जाना हमें ज़रूर गुरुन से ध्यान लगाता ॥ दोहा॥ नैंनन भरि भरि रोवती परे महल में सोग ॥ सुख में दुख हमें दे चले अब तैंने साधे जोग ॥ चौबोला ॥ राजा जी अब तैंने साधे जोग भोग हम से न हिं-कीये ॥ राज घरों की ब्याहि बहुत दुख हम को दीये ॥ खोटे खरचे दाम नाहक में फेरा लीये ॥ छोड़ चले पर देख बंधु मैं तेरे हीये ॥ जबाब गोपी चंद का रानी से ॥ राग सोरठ ॥ करम की रेख टरै नहीं टारी ॥ टेक ॥ करम के हाथ तुरंग नचावै करम हीं छत्तरधारी ॥ करम के हाथ करत है अमीरी करम ही जन्म भिखारी ॥ करम करै सोई बनि आवै करम की रेखा न्यारी ॥ राज पाट मैंने सब त्यागे भीख लगी मोहि प्यारी ॥ बैठी राज-करो महलन में कंचन पौल दुवारी ॥ हम करमन में लिखी-है फ़कीरी सो दिल माहिं करारी ॥ भव सागर की धार कठिन है बिसरि गई सुधि सारी ॥ लछमन हरि से ध्यान लगावो खेवटिया गिरिधारी ॥ करम की रेख टरै नहीं टारी ॥ जबाब रानी का राजा गोपी चंद से राग होली ॥ कुवर मैंने बहुत तरह समझाये । मेरी डोढी पर अलख जगाये ॥ टेक ॥ राजा भये कछु सार न जानी घर के माल लुटाये ॥ जो तेरी मनसा जोग जुगति में तो नाहक ब्याह रचाये ॥ बैरन सास भई है हमारी ऐसे दूत मिलाये ॥ राज को छोड़ भया राजा जोगी ठाड़े हैं भसम रमाये ॥ कानों में मुद्रा गले बिच सेली अंग भभूत-

रमाये ॥ लाज कान सब कुल की छोड़ी भीख मांगने आये ॥ सोच समरु मन बैठ रहो घर हरि चरण न चित लाये ॥ लछमन-राम सुमिर गुण गावो नाहक जनम गंवाये ॥ बात ॥ इतनी बात रानी रतन कुवारि की सुनि कर चल दिये और चले चले जहां मैंना वती माता बैठी थी वहां आय पहुंचे माता को भली भांति से प्रणाम कियो और माता ने असीस दीनी जब मात से आज्ञा लेकर बाक़ी हाल जवानी से कहा तब माताने आज्ञा दीनी जब ये कहा कि बेटा सुनो ॥ जबाब माता का गोपी चंद से ॥ दोहा ॥ चार खूंट रमते फिरो करो देश की सैर। बंगाले मत जाइयो जो तू चाहै खैर ॥ चौबोला ॥ बेटा जी जो तू चाहै खैर तेरी बरजै महतारी ॥ सुन गोपी चंद लाल अरज़ एक मान हमारी ॥ बेटा जी गुरु से राखो ध्यान रहैगी-लाज तुम्हारी ॥ दरशन दीजो फेरि तेरी सूरत परवारी ॥ + दोहा ॥ बंगाला कैसा बसे कैसा उन का भेस ॥ हमने देखा है नही तो राज किये चहुं देश ॥ चौबो० ॥ माता जी राज किये चहुं देश मुलक मैंने देखे सारे ॥ दिल्ली शहर सुथान देख लिये तख़्त तिजारे ॥ माता जी दक्षिण अरु गुजरात रहै नाहम से न्यारे ॥ पूरब पश्चिम देख लिये सब बल ख़ बुखारे ॥ + दोहा ॥ बचन हमारा मानियो बंगाले मति जाय ॥ बहन तुम्हारी चंपा वती देखत ही मर जाय ॥ चौबो० ॥ बेटा जी देखत-ही मर जाय बहन चंपादे तेरी ॥ तो हि लगे अपराध करै क्यों ऐसी फेरी ॥ बेटा जी चंदन विरवा छोड़ पेड़ क्यों बोवै बेरी ॥ जनम अकारथ जाय कही तुम मानो मेरी ॥ दोहा ॥ जा दिन से जोगी भये कर कर भगवां भेक ॥ घर सोलह सै नारि थीं तो इन में मरी न एक ॥ चौबो० ॥ माता जी इन में मरी न एक बहन मेरी कै

से मरैगी॥ या सूरत को देख बङ्गत सा रुदन करैगी॥ माता जी आवेंगे समझाय धीर दिल मांहि धरैगी॥ तुम लीजो बुलवाय समझ घर बैठ रहैगी॥ दोहा॥ तू बेटा भूल्यो फिरै मैं समझाऊं तोय॥ घर की तिरिया जो मरै सो अरध शरीरी होय॥ चौबो॰ बेटा जी अरध शरीरी होय नारि सो ही मरि जावै॥ आप निरै कुल त्यार जगत में नाम चलावै॥ बेटा जी बीर विछोहा हुए फेर जिनको न मिलावै॥ लाख जतन करो फेर जनम सूरत नहिं पावै॥ दोहा॥ मतलब को संसार है क्या समझावै मोहि॥ बहन बडेरी होयगी जो देने को होय॥ चौबोला माता जी जो देने को होय बहन को भाई छाजै॥ देने को नहिं होय फेर कोई बात न बूजै॥ माता जी ये जग में व्योहार राज अपने घर सूजै॥ हम जोगी अवधूत कहा बहनंल को दीजै॥ दोहा॥ चातुर से मूरख बने सुन गोपी चंदलाल॥ सदा विहूनी वेर हैं विन बीरन व्योसाल॥ चौबोला बेटा जी विन वीरन व्योसाल सदा तिन कूं दुख भारी॥ लाख बडेरी होंय करैं वह आस तुम्हारी॥ बेटाजी निश्चै कर तू जान तेरी बरजै महतारी॥ बंगाले मत जाय कहैगी दुनियां सारी॥ दोहा॥ हम जोगी अवधूत हैं करैं देश की सैल॥ माता छोडी रोवती तो गही बंगले की गैल॥ चौबोला॥ प्रभु जी गही बंगाले की गैल सोच मन में नही लाये॥ करी देश की सैल गौड बंगाले आये॥ प्रभु जी जा राजा के महल कुवर ने अलख जगाये॥ खबरि भई रणवास रहस कर नाद बजाये॥ जबाब चंपा दे बहन का बांदी से दोहा॥ चंपा देरानी कहै बोली बचन सम्हार॥ भिक्षा लेकर जाइये तो जोगी ठाड़े द्वार॥ चौबो॰॥ बांदी री जोगी ठाड़े द्वार धूप में अंग पसीजै॥ लै कंचन को थाल भीख जोगी

को दीजै ॥ बांदीरी ड्योढ़ी सेवा करै देर उनको नहिं कीजै ॥ नातर जाय निरास बचन सत के सुनि लीजै ॥ दोहा ॥ भिक्षा ले बांदी चली राजों के दरवार। ड्योढ़ी पहुंची आन के तौ बोली वचन सम्हार ॥

चौबोला ॥ प्रभुजी बोली बचन सम्हार भीख मैं तुम को लाई ले जोगी के लाल दूर से अरज़ लगाई ॥ प्यारे जी वा सूरति को देखि बहुत मन में मुरझाई ॥ जिन घर जनमे कुवर मरै क्या जीवै माई ॥ जबाब बांदी का राजा गोपी चन्द से ॥ राग होली ॥ जोगी कौन देश से आये। तैने हँसि कर नाद बजाये ॥ टेक ॥ जोग जुगति की सार न जानी ठाड़े हैं भस्म रमाये ॥ कानन की सुरखी नहीं सूखी मुद्रा का रूल काये। कै तेरा बाप भया दुख दाई क्या भइया धम काये ॥ कै तेरे घर में नारि करकसा मन दिलगीरी लाये ॥ चंद्र बदन सी काया दम कै सूरज किरन समाये ॥ मात पिता घर कैसे जीवैं जिन के कुल तुम जाये ॥ बैठि रहो तुम इसी महल में हरि से ध्यान लगाये ॥ लछमन प्रराणि सदा है तेरी ज्ञान गुरुन से पाये। दोहा ॥ गोपी चंद राजा कहै बोले बचन सम्हार ॥ तू बांदी रण बास की मेरा जोग अकारथ जाय ॥ चौबोला ॥ बांदी री जोग अकारथ जाय तेरी भिक्षा नहिं लेऊं ॥ हमें गुरुन की आ

न हुआ ताते नाहिं देऊं॥ बांदीरी जाओ महल में बैठ बात तु-
म सें कह देस्यूं॥ हमें दिखाओ भीख आज मेरैं जो धरेस्यूं
॥दोहा॥ सुनि कें बांदी रिस भई बोली बचन सम्हार॥
झोली ल्यूंगी छीन कें तो धक्का दूंगी चार॥ चौबोला॥ प्यारे
जी धक्का दूंगी चार हमें तू बांदी बोलै॥ तू जोगी बेईमान ब-
न्यो छलिया सौ डोलै॥ जोगी के ऐसा करै जबाव खड़ाओ
ढ़ी के बोलै॥ मारूंगी मैं बांस तेरैं गिनती के सोलै॥ दोहा
नैंनन भरि भरि रोवते सुनि बांदी की बात॥ एक दिना-
लई मोल तू राखी जी के साथ॥ चौबोला॥ बांदीरी रा-
खी जी के साथ आज मैंने लई फ़कीरी॥ तू मारै मेरैं बांस
भई मेरे मन दिल गीरी॥ बांदीरी राज पाट दिये छोड़ त-
जे मैंने तख़्त अमीरी॥ करम लिखा मेरैं जोग रही रस
नाम शरीरी॥ दोहा॥ जा जोगी के बाल का जो तू चाहे
खैर॥ घरघर भिक्षा मांगता तू करता डोलै सैर॥ चौबो
ला॥ जोगी के करता डोलै सैर छलैगा नारि पराई॥ ये
छल की हैं बात अंग में भसम रमाई॥ जोगी के कब तनें
लीनी मोल हमें बांदी बतलाई॥ झोली ल्यूंगी छीन करै तू
बहुत बड़ाई॥ दोहा॥ धारा नगर सुथान है वहां किया
तेरा मोल॥ मन दिलगीरी ना करी तौ कंचन दीये तोल॥
चौबोला॥ बांदीरी कंचन दीये तोल मोल जब तुम को
लीनी॥ ये राजों की रीति बहन के सोभै दीनी॥ बांदीरी आ
ज लियें मैंने जोग बहुत तेरी सेवा कीनी॥ है मेरी बहन मि
लाय फिरैं क्यौं मति की हीनी॥ दोहा॥ सूरत को निरखै खड़ी
पदम जो कुल के पाय॥ नैंनन भरि भरि रोवती तो बगद महल
में जाय॥ चौबोला॥ प्रभु जी बगद महल में जाय सुनहु चं

पादे रानी ॥ जोगी आये द्वार कोई कुदरत की बानी ॥ रानीजी चल कर दरशन करो यही मेरे मन मानी ॥ नहिं सूरत रमिजाइ फिरै जोगी सैलानी ॥ जवाब रानी चंपा दे का बांदी से दोहा करि करि भंगवा कापड़ा राखैं जोगी भेक ॥ यों दुनियाँ संसार है तो ऐसे फिरैं अनेक ॥ चौबोला ॥ बांदीरी ऐसे फिरैं अनेक रूप वे जग को मोहैं ॥ कोई साहब के लाल मढी बिच बैठे सो हैं ॥ बांदीरी कोई मुनि बनि जाय अंत दुनियां को मोहै ॥ वे जोगी अब नाहिं दरश जिन का वी होहै ॥ दोहा ॥ सूरति मूरति मोहिनी चंदन दिये शरीर ॥ पाय पदम मुख चंद्रमा तो गोपी चंद उनिहार ॥ चौबोला ॥ रानी जी गोपी चंद उनिहार पार जिन का नहीं पावै ॥ कंचन बने शरीर द्वार पर अलख जगावै । रानी जी लेना नाहीं भीख बहुत करि तुम्हैं बुलावै ॥ चल कर दरशन करो बचन ऐसे समझावै ॥ दोहा ॥ तू बांदी रण वास की तो बकती फिरै गवारि ॥ जिभ्या लूंगी काटि के तो बैठि रहो मन मारि ॥ चौबोला ॥ बांदीरी बैठि रहो मन मारि बहुत तू करै जवानी ॥ खाये हैं मेरे माल फिरै तू मस्त दिवानी ॥ बांदीरी गोपी चंद मेरा बीर घरैं सोलह सौ रानी ॥ इक छत्र जिन का राज रहै ना जग में छानी ॥ दोहा ॥ कर जोरैं अरज़ी करैं बोली बचन बनाय ॥ सूरति पै छवि छा रही पदम जो झलकत पाय ॥ चौबोला ॥ रानी जी पदम जो झलके पाय भेष जिन अधिक बनाये ॥ है कोई राजकुवार खड़े हैं बदन छिपाये । रानी जी लेना नाहीं भीख बहुत कर तुम्हैं बुलाये ॥ बीस बिसे तेरा बीर आज मिलने को आये ॥ दोहा ॥ चंपा दे रानी चली भर मोतिन का थाल ॥ ड्योढ़ी पै ठाड़ी कहै तो ले जोगी के लाल चौबोला ॥ प्यारे जी ले जोगी के लाल भीख मैं तुम को लाई ।

क्यौं ठाड़े दिलगीर दूर से अरज़ लगाई ॥ प्यारेजी कोन पिता
के पूत कोन तेरी है माई ॥ कोन तुम्हारा देश कहां को सुरति
उठाई ॥ जबाव राजा गोपी चंद का बहन चंपादे से ॥
दोहा ॥ कंकर पत्थर सब तजे मैं समझाऊं तोहि ॥ भोजन होइ
तो ल्याय दे तो खुधा व्यापी मोहि ॥ चौबोला ॥ बाईजी खुधा
व्यापी मोय तेरी आसा करि आये ॥ हीरा मोती लाल हमें क
छु ना हि सुहाये ॥ बाईजी माय दिया उपदेश सोच मन में नहिं
ल्याये ॥ सब छांड़े परिबार गुरुन से ध्यान लगाये ॥ दोहा ॥
सदा किसी की ना रही सांची करके जान ॥ चार घड़ी गम खाइ
ये तो गोपी चंद की आन ॥ चौबोला ॥ प्यारेजी गोपी चंद की आन
तुम्हें मैं भोजन ल्याऊं ॥ करूं रसोई त्यार महल में बैठ जिमाऊं ॥
जोगी के तेरी सूरत मेरा बीर वचन सत के समझाऊं ॥ जो तू भूख
जाय बखत ऐसा नहीं पाऊं ॥ दोहा ॥ रहे बदन मुरझाय कर तो
बोले वचन बनाय ॥ हम हीं बहन तेरे बीर हैं तू किस की सौगंद खा

य॥ चौबोला॥ बाईजी किस की सौगंद खाय तेरे बीरन कह लावैं॥ करम लिखा मेरे जोग द्वार तेरे अलख जगावैं॥ बाईजी माय दिया उपदेश सोच मन में नहिं ल्यावैं॥ गोपीचंद मेरा नाम बचन सत के समझावैं॥ दोहा॥ तू जोगी छलिया फिरै कोन मिलै है बूत॥ किस राजा के दोहते किस राजा के पूत॥ चौबोला॥ प्यारेजी किस राजा के पूत नाम माता कोलीजै॥ कैसे साधे जोग सोई हम को कह दीजै॥ प्यारेजी बोलो बचन सम्हार बात छल की नहीं कीजै॥ गोपी चंद मेरा बीर राज धारा का कीजै॥ दोहा॥ पिता तिलक चंद्राव है हम गोपी चंद जान॥ मैंनावंती माय है तो नाना गंधप सेन॥ चौबोला॥ बाईजी नाना गंधप सेन बहन चंपा दे मेरी॥ आपे हैं तेरे द्वार करी बंगाले फेरी॥ बाईजी घर घर अलख जगाय कहूं मैं बात भुतेरी॥ खुद्या व्यापी मोहि करी मैंने आसा तेरी॥ दोहा॥+ छल बल हम से मति करै बोलि जी बचन सम्हा[illegible] नाम पिता का देशा मैं तो जानत सब संसार॥ चौबोला॥ प्यारेजी जानत सब संसार जगत में आय जस लीये॥ हो गये मुलक निहाल ब्याह मेरे जा दिन कीये॥ प्यारेजी जब जानूंगी बीर कहा मेरी सोभै दीये॥ हम को देहु बताय छान जैरे अम्रत पीये॥ दोहा॥ पिता तिलक चंद्राव ने मन में किया विचार॥ पंडित लिये बुलाय कै तो बैठे आसन मार॥ चौबोला॥ बाईजी बैठे आसन मारि लगन की करी तयारी नौ घोड़ा दश ऊंट सजे हाथी अंबारी॥ बाईजी जा दिन चढ़ी बरात दिये मैंने चीर हज़ारी॥ बांदी राज कुमारि हुई सोभै में न्यारी॥ दोहा॥ धारा नगर सुथान है बसै छत्री सौ जान॥ कै मेरे बसैं परोस में कै मेरी गये बरात॥ चौबोला॥+

प्यारेजी कै मेरी गई बरात पिता घर नौबत बाजे॥ सोभा आ
ये देखि किये हम से छल आजे॥ प्यारेजी गोपीचंद मेरा बीर
पांव में पदम बिराजे॥ कंचन बने शरीर चंद्र माथे पर साजे।
दोहा॥ कर जोरैं अरज़ी करैं ठाढ़े एक ही पाय॥ तेरैं तो इत-
बारना हम कहते समझाय॥ चौ॰ बाईजी हम कहतेसमझाय
नगर धारा में बासे॥ तपे धरम का राज बैठि जहां गद्दीखासे
प्रभुजी किये गुरुन को याद पाव में पदम पहासे॥ कंचन ब
ने शरीर चंद्र माथेपर राजै॥ दोहा॥ सूरत को निरखै ख-
ड़ी शोभा कही न जाय॥ लिये कुवर पहचानि कै तो गिरी त
मारे खाय॥ चौबोला॥ प्रभुजी गिरी तमारो खाय कुवर
चंपादे रानी॥ रोवत जारवेज़ार बहे नैंनन से पानी॥ भैया
रे सुख में साधा जोग ऐसी क्या मन में जानी॥ परी धरनि
में जाय निकल गया जी सैलानी॥ दोहा॥ गोपीचंद राज
खड़े दोऊ कर मीडे हाथ॥ कागद होय तो मेट दूं करम न
मेटा जात॥ चौबोला॥ प्रभुजी करम न मेटा जात नयन
भरि भरि कें रोवै॥ बहन मरी बेहाल जगत में हुए बिगोवै।
प्रभुजी जा दिन से लिये जोग नींद भरि कभी न सोवैं॥ करैं गु
रुन को याद जोग मेरे यों ही खोवैं॥ अथ बारता॥ जब
राजा गोपी चंद ने बंगाले में महा दुख पाया तो बड़ी आधी
नता से गुरुजी से अपनी अरज़ कीनी कि हे दीन दयाल ऐसे
संकट में मेरी सहाय करे॥ तब गुरुजी ने अपनी गुफ़ा में
आवाज़ सुनी कि राजा गोपीचंद पर बंगाले में बड़ा कष्ट पड़
रहा है॥ जब गुरुजी यह सुनते ही एक घड़ी के बीच में बं
गाले में आय पहुंचे और गोपी चंद के पास जाय कर खड़े
खड़े हंसि रहे हैं तब जाना कि चेला बहुत जिज्ञासु तब बोले

जबाव गुरू जी का राजा गोपीचंद से दोहा ॥ कानभन क गुरु के पड़ी कुवर करै अरदास ॥ छांड़ि गुफ़ा जोगी चले- तो आन खड़े हैं पास ॥ चौबोल्ला ॥ चेला जी आन खड़े हैं पास कुवर बरजै थी माई ॥ क्यों डाढ़े दिलगीर करी सो रवि ने चाई ॥ चेला जी चलो मढ़ी के पास अबकूं क्यों देर लगाई ॥ चलो हमारे साथ लिखी करमन की पाई ॥ जबाव राजा- गोपीचंद का गुरू जी से दोहा ॥ तुम गुरू दीन दयाल्ल हो लज्जा थारे हाथ ॥ कै मेरी बहन जिवाय दे नहीं मरूं ब- हन के साथ ॥ चौबोला ॥ गुरुजी मरूं बहन के साथ जो- ग मेरे खंडित कीये ॥ नैंक दरद नाहिं तोहि जगत में औज स लिये ॥ प्रभुजी मेरी बहन जिवाय बचन तुम सों कह दीये ॥ नातर औटि सराप सदा नाहिं जग में जीये ॥ दोहा ॥ हँसि कर बचन सुनावते खड़े कुवर के पास ॥ जोग जुगति जानी नहीं तो अब क्यों भये उदास ॥ चौबोला ॥ चेला जी- अब क्यों भये उदास सोच मन में क्यों लाये ॥ लेहु अलख का नाम पार जिन का नाहिं पाये ॥ प्रभुजी अंगुली लई तरा प्र गुरू ने अम्रत प्याये ॥ चंपा दे के प्राण फेरि घट भीतर आये ॥ दोहा ॥ राम राम कहती उठी दोनों भुजा पसार ॥ आ बीरन मिलि लीजिये तो अब क्या करै अबार ॥ चौबोला भैया जी अब क्या करै अबार करो मिलने की त्यारी ॥ तुम गो पी चंद बीर बहन मैं तुम को प्यारी ॥ भैया जी गुरु के दरशन करो अरज़ एक सुनो हमारी ॥ मन के मिटि गये सोच लाज र ह गई तुम्हारी ॥ दोहा ॥ तुम घर राज रु पाट है हम जोगी ते रे बीर ॥ मेरे अंग भभूत है बिगड़े तेरा चीर ॥ चौबोला ॥ + भाई जी बिगड़े तेरा चीर कहां से फेरि मगावैं ॥ मो पै पैदा ना

हिं अरज़ अपनी समझावै ॥ बाईजी माय करै तेरी प्यार भावज तोहि न्योंत जिमावै ॥ हम जोगी अब धूत कोई छिन में रमि जावै ॥ दोहा ॥ आगानि लगाऊं राज में दूंगी चीर जलाय ॥ तुम से बीरन और कें तो मिलें न दूजी बार ॥ ६ चौबोला ॥ भैयाजी मिलें न दूजी बार तेरी सूरत परवारी। तुमें दिया उपदेश मरी क्योंना महतारी ॥ भैयाजी घर सोलह सौ नारि तजी वे सुख में न्यारी ॥ नैक न राखे मोह आज तैंने बहन विसारी ॥ दोहा ॥ बिन साहिब की बंदगी तेरी सकति न होय ॥ लछमन औसर जात है फिर मिलना नहिं होय ॥ दोहा + ॥ गुरु की आज्ञा पाय कै दोनों भुजा पसार ॥ गोपीचंद राजा मिले तो यों मिलियो संसार ॥ ६

चौबोला

प्रभुजी यों मिलियो संसार विरह से बहन मिलाई ॥ कर जोरे एक पांव बहन अपनी समुझाई ॥ बाईजी जा अपने घर बैठ भई सो रचि नेचाई ॥ हम को होत अबेर लिखी करमन की पाई ॥ दोहा ॥ बैठ रहियो महल में तो काहे लगा बियोग ॥ धूनी दूंगी डारिकें तो बैठे साधो जोग ॥ चौबोला ॥ भैयारे बैठे साधो जोग हमें तुम दर्शन दीज्यो ॥ बूंटी दूंगी छान बैठि कर यहां हीं पीज्यो ॥ भैयारे सेवा करूं बनाय सोच मन में ना कीज्यो ॥ जै टिकने के नाहिं संग बहुएन्न को लीज्यो ॥ दोहा ॥ मंदिर तेरा काचका सब धूआं लग जाय ॥ धूनी डारो महल में तो राजा बहुत रिसाय ॥ चौ॰ ॥ बाईजी राजा बहुत रिसाय कहां से जोगी आये ॥ गाली तुमको देय महल में क्यों बैठाये ॥ बाईजी हम को आवै लाज नाहक में नाम धराये ॥ तुम घर भोगो राज हमें अब जोग सुहाये ।

दोहा ॥ राजा की सम माय दूं सेवा करूं बनाय ॥ आठ पहर तेरे ढिग रहूं तो भोजन देऊं जिमाय ॥ दोहा ॥ देश देश रमते फिरैं सात दीप नौ खंड ॥ फिर कर पीछा देखिलो तो अगनि भई परचंड ॥ चौबोला ॥ बाई जी अगनि भई परचंड महल की जरत अटारी ॥ राजा बहुत रिसाय भई सब कंचन कारी ॥ प्रभु जी बहराल फेरी पीठि किये ऐसे छल भारी ॥ रोवत छांड़ी बहन मिटी दोउ सूरत प्यारी ॥

दोहा

॥ गुरु जालंधर सुमिरि के भये मढी के पास
लछमन की आधीनता पूरण हो गई आस

चौबोला

प्रभु जी पूरण हो गई आस मिले जब सतगुरु खासे
सुनो सभी चित लाय रहे ना भूखे प्यासे ॥
माता जी धन्य सरस्वती माय सोई हिरदे परगासे
लछमन है आधीन मिटे सब संकट सांसे ॥

इति श्री लछमन दास कृत राजा गोपीचंद लीला संपूर्ण

मिती फाल्गुण कृष्ण
द्वितीया
संवत् १९२६ ॥

दोहा

नृप प्रताप तैं देश में रहै दुष्ट नहिं कोइ ॥
प्रगटत तेज दिनेश को तहां तिमिर नहिं होइ
बीर पराक्रम ते करै भुव मंडल को राज ॥
जोराबर यातें करत बन अपनो मृग राज ॥

दोहा ॥ निस दिन खटकत तनक तन परै जु आँखिन माहिं तिन सें सज्जन राखिये सो छिन खटकत नाहिं ॥ दोहा ॥ सजन बचावत कष्ट ते रहै निरंतर साथ ॥ नैंन सहाई ज्यौं पलक देह सहाई हाथ ॥ १ ॥ जहां सनेही तहां रहत भ्रमत भ्रमत मन आय ॥ फिरत कटोरी मंत्र की चोरी पै ठहराय ॥ दोहा ॥ प्राण पियारे के दरश हिय तें बढ़त हुलास ॥ फैलत लगे बयारि तें ज्यौं फूलन में वास ॥ २ ॥ सुनत श्रवण पिय के बचन हिय विकसै हित पागि ॥ ज्यौं कदंव बरषा समैं फूलन बूंदनि लागि ॥ ३ ॥ औछीमति युवतीन की कहैं विवेक भुलाय ॥ दशरथ रानी के बचन बन पठये रघुराय ॥ ४ ॥+

कवित्त

दूरि जदुराई सैना पति सुखदाई रितु पावस की आई नहीं पाई प्रेम पतियाँ ॥ धीर जलधर की सो सुनि धुनि धर की सो दरकी सुहागिन की छोह भरीं छातियाँ ॥ आई सुधि बर की सो हिये आनि करकी कहां जु प्राण प्यारे वह प्रीति भरीं बतियाँ ॥ बीती औध आवन की लाल मनभावन की डग भई बावन की सावन की रतियाँ ॥ सवैया ॥ आवते गाढ़ असाढ़ के बादर मो तन में अति आगि लगावते ॥ गावते चाइ चढ़े पपिहा जनि मोसों अनंग सौं बैर बंधावते ॥ धावते बारि भरे बदरा कब श्री पति जू हियरा डर पावते ॥ पावते मोहि न जीवते प्रीतम जौ नहिं पावस मैं घर आवते ॥ १ ॥ आई रितु पावस न आये प्राण प्यारे यातें मेघन बरजु आली गरजन लावैं ना ॥ दादुर हटकि बाकि बाकि कैं न फोरैं कान पिक न फटाकि मोहि सबद सुनावैं ना ॥ बिरह बिथा तैं हौं तो व्याकुल भई हौं देव जुगुनू चमाकि चित चिनगी उठावैं ना ॥ चातक न

गावैं मोर सोर ना मचावैं घन घुमरिन छावैं जौलौं लाल घर आवैं ना ॥ कवित्त ॥ घेरि घेरि घन आये छाय रहे चहुं ओर कौन हेत प्रान नाथ सुरति विसारी है ॥ दामिनि दमकि जैसी जुगनू चमक तैसी नभ मैं विशाल बग पंगति संवारी है ॥ ऐसी समैं व्रज चंद धीरना धरत नैंक विरह विथा नैं होत व्याकुल पियारी है ॥ प्रीतम पियारे नंदलाल विन हाय यह सावन की रात किधौं द्रौपदी की सारी है ॥ १ ॥ ऐसी रूरी बूंदन में दूंदन उठायो काम मूंदे मुख पियारी बनी गूंदे ना बहरि कें। कहै कवि शिवनाथ झिल्लीगन गाजत हैं सावन में बहै रस लहरी छहरि कें ॥ ऊनरी सुकंजदुति दूनरी दृगन बाढ़ी झूनरी कहाति सांरू जूनरी गहरि कें॥ ऊनरी घटा पै गोरी तूनरी अटा पै बैठ खूनरी करैगी लाल चूनरी पहरि कें ॥ २ ॥ जोवन प्रवेश में विदेश मद सूदन जी निपट अंध्यारी कारी सावन की जामिनी ॥ एकटक रटत पपीहा पिक नील कंठ हियो चमकत दमकत जब दामिनी ॥ सूनी सेज मंदिर में सुंदरि विसूरै बैठी प्रीतम सुजान विन कैसे जिये भामिनी ॥ नैंन भरि २ ढरैं सुख हरैं हरि करैं उझरि उझरि परै काम भरी कामिनी ॥ ३ ॥

इति कवित्त संपूर्ण

डेरा जीउनी मंडवी राधा कृष्ण जो नाम
उदर हेत उद्यम करै लेखक का ये काम
गोपी चंद लीला लिखी अर्गल पुर के माहि
माघ सुदी पून्यों दिना पूरण करी जो ताहि
संबत् १९२६
शुभम् 57
1869

قصہ رمن شاہ
سکندر شاہ بادشاہ کے
بیٹے کا
सिकंदर शाह पातशाह
के
शाहजादे रमन शाह का
किस्सा
قیمت فی جلد
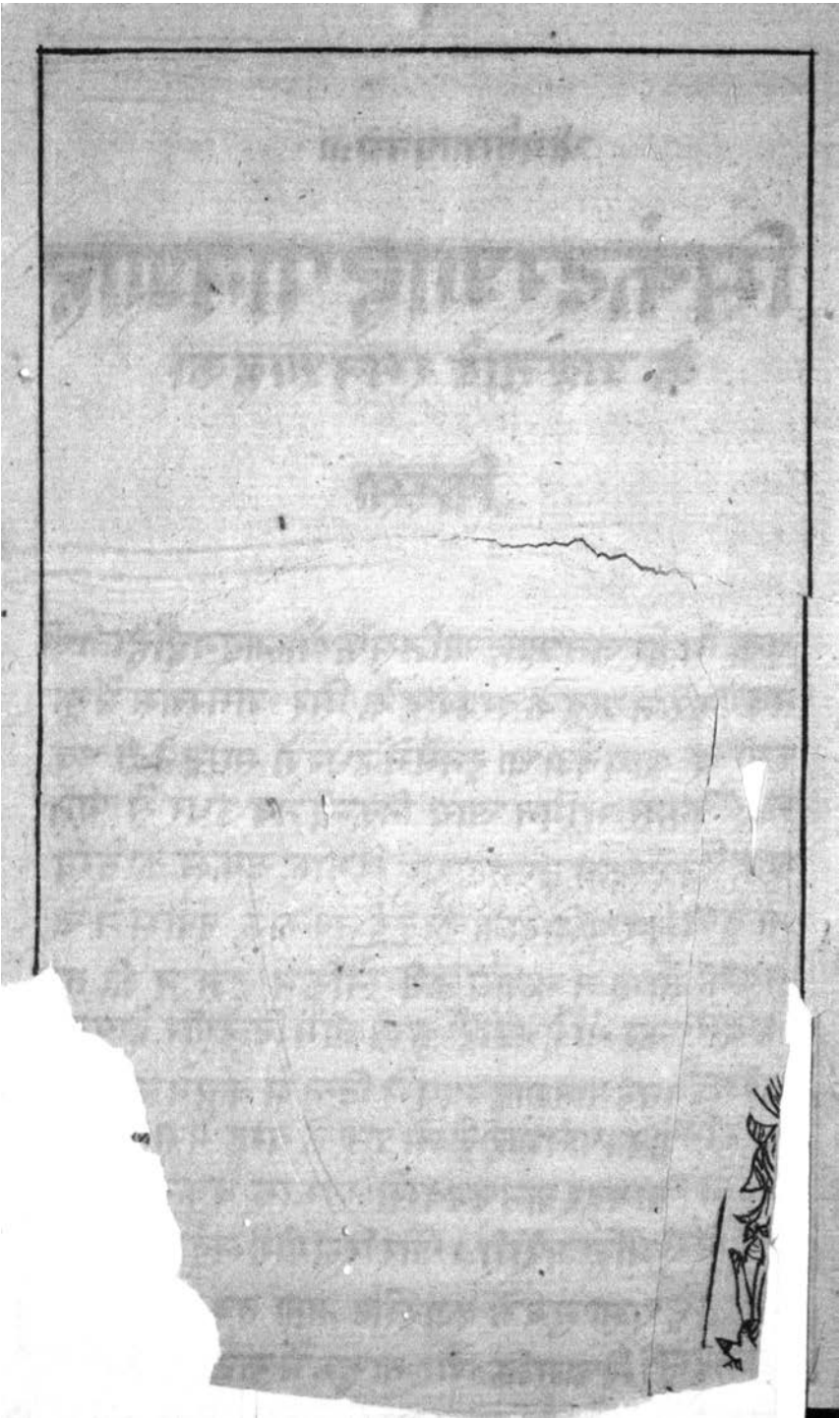
श्रीगणेशायनमः॥

सिकंदरशाह पातशाह

के शाहज़ादे रमन शाह का

किस्सा

एक सिकंदर पात शाह था जिसकें औलाद नहीं होतीथी तव एकरोज शुव्हू के वख़्तशाह के सिर आमखास में कुरसी पर आय वैठा था इतने में उधर से साम्हने ही एक झारू वकस भंगिन आय निकली तव उधर से पात शाह का देखना हुआ इधर से झारू वकस का देखना हुआ चार चस्में दोनों की हुई तव झारू वकस ने पात शाह कोभी न सलाम करी लेकिन हज़रत की तरफ़ देखि कर भौंहे चढ़ाई कुछ जीमें दिलगीर होय चलीगई। तव पातशाह अपने दिल में कहने लगा कि मैं दुनियां का पातशाह हूं जो शुव्हू के वख़्त मेरा मुह देखै तो सवा पहर कनचनवरसे। सो झारू वकस मेरा मुह देख भौंहे मरोंरी। और दिलगीरी लई इसका सवव क्याहै। एसा मुरु में क्या खोट जाना तव पात शाह अपने दिल में विचारा कि और तो मुरु में कुछ एव नहीं ले-

किन मेरें औलाद नहीं होती सो यह सवव कर भंगिनेने भी हैं मरोरी के आज मउबू के वरखत पातशाह का मुहदेखा है देखा चाहिये किसी से तकरार न हो। तव पातशाहने दिल में विचारा कि दादा का नाम तो हमारे वापसे चला और वाप का नाम हमसे चला और हमारा नाम किस्से चलेगा। तव पातशाह इस वात को सोच दिलमें वडा गिरफ़ार हुआ। पातशाहित में से। दिल छोड़ फकीरी लेना खूव है॥ तव हज़रतनें आम खास से कूंच कर महलोंमेंगये जाकर अपनी पोशाक उतारी और एक ताज सिर पर रक्खा और दुपट्टी फाडकें गले में पहना और महलमें से वाहर निकला तव जितने दरवार के अमीर उमराव वकसी दीवान और शहर के भले मानस हाजिर थे सो सव पातशाह के साथ चले और जो कोई शहर में थे भले मानस कार गुजारीवाले उन्होंनेभी दरवाजे से निकल सलाम करी फिर अपने२ काम करने लगे और हजूर के नोकर थे सो सव साथ हुवे जय दिल्ली के वाहर निकसे तव सव लोगों को वडी फिकर हुई। तव उहां सवोंने उजीरसे अर्ज कीनीकि हज़रत शाहसे अरज़ गुजरानी चाहिये कि यह क्या सवव है जिस्से पांय पयादे शहर वाहर निकले तव इतनीवात सव अमीर उमरावों की सुनि उजीर ने हाथजोर पातशाहसे अरज कीनी। तव हजरत ने फरमाया कि तुजे इसवात से क्या मतलव है ये जो मेरे साथहें तिन्हो को लेकर शहर को रुकसद हो। तव यह सुनि उजीरने सवों को रुखस

द दीनी और पातशाह उजीर दोनों आगे चले आगे
जाय हजरत ने उजीर से फरमाया कि तुम भी शाहर आ
ओ तब उजीर ने अरज़ कीनी कि हजरत सलामत आप
की बदौलत मैंने बहुत सुख पाया अब मुझे क्या हुकम है
कहां को जाऊं हजरत सलामत मैंभी आपके साथ फ़की
र हूंगा तब फेर पातशाह ने फरमाया कि उजीर तू इ
स बात में क्या लेगा तू अपने डेरे को जा तब वजीर ने
फेर अरज़ कीनी के हजरत सलामत में डेरे को जाऊंगा
पे देश वा खजाना व रैयत वा हुकम के ताईं तो नहीं लीये
जाता हूं। तू शाहर अंदर जा पात शाहित का बंदो बस्त
कर और लोगों को दिलासा दे। इतनी बात सुनि कर-
वजीर तो विदा होके दिल्ली को आया और पातशाह व
हांसे आगे चले इतनी बात होते दिन पहर एक चढा +
तब आगें जाय देखे तो एक बडा भंगी रस घन देख तहां
पहुंचे तहां एक बडा खुश रंग दरखत था जिसके नीचे
जाय बैठे अपने शरीर को देखने लगे। तब खुदा ने हज
रत की तरफ देखा और इनायत करी फ़कीर का भेस क
र खुदा पात शाह के आगे खडा हुआ तब पातशाह से
पूछते हैं के तू क्यों रोता है तब पातशाह ने जवाब न-
हीं दीया तब फेर खुदा ने पूछी कि तू जवाब क्यों नहीं दे
ता है तब पात शाह ने गुस्सा होकर यह कहा जो तू ऐसी
पूछता है जाने मेरे दिल की मुराद हासिल करदेगा तब
फ़कीर ने कहा जो तेरे दिल अंदर सोच है तो मेरे कहने
से और खुदा के करने से तेरे दिल की मुराद हासिल होइगी

तब पातशाह ने कुछ नरम दिल होकर फ़कीर से अरज कीनी के फ़कीर साहब मेरें औलाद नहीं होनी इसवास्ते मैंने फकीरी लीनीहै तब फकीर साहब ने कहा कितू अपने घर को जा तेरै फ़रज़ंद होयगा तब पातशाह बहुत खुश हुआ फ़कीर साहब से विदा होकर दिल्लीशहर को आया। और महलों में गया तबफ़कीर भेस तो उतार डाला और पातशाही रेखतन पहरा। तब शहर में अमीर उमरावों पर खबर पहुंची के पातशाह महलो में दाखिल हुये तब ये सुनिकर बडी खुशीहुई। नौबत निसान बाजे बडी खैरात कीनी। तब दूसरे रोज शुब्ह के वख्त पातशाह तख्त पर बैठे और तमाम अमीर उमराव औरशहर के भले२ मानस और साहूकार लोग नज़रानालेके आये। तबपातशाह बडी खुसीसे सब को दिलासादीनी और शहर में बडी खुशीहुई जो पातशाहित के लोग थे तिन का दिल ठिकाने आया। फिरपात शाहत करने लगे तब असिल नें अर्ज़ कीनी कै हज़रत सलामत- आपके शहजादा हुआ तब यह वात सुनिके पातशाह को बडी खुशीहुई। और इस्को बडीइनामबक्शी। और माल मुलक हाथी घोडे पालिकी जवाहिर जरदीदुनियां दार को इनाम की बडीउम्मेद हुई नौवति बजवाई। और घर घर अमीर उमरावोंकेवधाईहुई। औरपात शाह ने उसी वख्त निजूमी बुलाये और पातशाहके शहजादेका नाम धरवाया। निजूमियोंने स्याइत विचारी औरअर्ज कीनी कि हजरत सलामत ये स्याइत खुश नसीबआई॥

इस का नाम रमन शाह जादा रक्खा। निजूमियों को बड़ी
विदा दीनी तब निजूमी अपने डेरे को गये तब ऐसे ही एसे
पातशाहजादा वरस पांचका हुआ तब मौलवी के प
ढने बैठाया तब पढते २ वरस बारह का हुआ खुशी-
राजी खूब पढ़ चुका तब आखुनने एकरोज पातशाह
जादे को अपने साथ लेकर हजरत के हजूर में पहुंचा
सलाम कर अरज कीनी कि हजरत सलामत शाहजा
दा आप का पढ चुका और इल्म फारसी वा अरबी में
बहुत खबर दार हुआ तब पातशाह ने बेहुसन आखुन
को बड़ी इनाम दीनी और विदा करे। तब शाहजादा हज
रत के साम्हने खड़ा होकर हाथ जोड़ अरज करने लगा
कि हजरत सलामत मुझे जिन्होंने पढाया तिन्हें बड़ी इन
म हुई। मुझे कुछ इनाम नहीं हुई इसका क्या सबब है तब
पातशाह खुश होकर बोले कि तुमको क्या इनाम है यह
शहर मुल्क खजाना है सो सब तुम्हारा ही है तब पातशा
हजादे ने अरज कीनी कि हजरत सलामत मै एक घोडा
पाऊं वास्ते खेलने शिकार के खेलने शिकार की परवान
गी पाऊं शिकार को रोजीना जाया करूं। यही इनाम पाऊं
तब पातशाह ने फरमाया कि अच्छा घोडा मिलेगा तब
रोज सारे दिन शाहजादा शिकार खेलने जाया करे। तब
शिकार खेलते २ चार महीने गुजरे तब एक रोज शाह
जादा शिकार खेलके शहर मे आता था। और राह के
सिर एक कूआ था तिसे एक भटियारी पानी भरती थी
वहां दोनों की नजर बंदी हुई और पातशाहजादा बेहोश

दीनी है तव छवीली की सासने पान की टिपारी मंगाई ॥
बीरा लगाइ कें छवीली को सौंपि कें जा तू दे आउ तव छ
वीली ने शाहजादे को बीरी हाथमें दीनी तवबीड़ीनेशा
हजादेने मुहमें दीनी और जेवमें हाथडालदो असर्फीनि
काल छवीली के हवाले करी तव असरफी लेके छवीली
सासके पास पहुंची असरफी सासके हवाले करी तव
सासने जानाकि ये सिपाई छवीली पे आशक हुआ तवस
सने कहा ए छवीली एकपान की बीड़ी खूब मसालेदार
खुशनमा बनाके सिपाई को औरदे तववीडीवना छवीली
सिपाई के आगे पहुंची कहाकि सिपाई साहववीड़ीओ
रलीजिये। तव शाहजादेने कहा कि आगे आ तवआगई
और बीरी देनेलगी तव शाहजादेने वीडीलेलीनी और छ
वीली सेकहा कि महतरानी तू यहां आउ पलका पर एक
घडी वेठजा। इतना जवाव सुन भटियारी ने हाथजोरिके
अर्जी कीजी कि महरवान यह काम हमारा नहीं साहव
की वरावर पलका पै बैठें तव शाहजादे कहा कि तुझे मा
फ है तू वेशक पलका पै वैठ। इतनी सुन भटियारी पलका
परवैठी। तवछवीलीनें कहा कि ए सिपाई एक वातका मु
झसे क़ौल करो तव सिपाईने कबूल किया। तवछवीलीने
कहा कि तुमारा दिल चाहे सोई मुझे कबूलहे लेकिन
जवलाई तुम दिल्लीमें रहो तव लाई मेरे डेरेमें रहो तामुझे
कबूलहे। तव शाहजादेने कबूलकिया और खुदाकीक
समखाई। तव छवीली और शाहजादा दोनों खुशीहुए शा
हजादेका काम सव पूरा हुआ और दिलमें खुश होय

छबीली से कहा कि हम अपने डेरे जाते हैं तब छबीली ने क
हा साहब खाने दाने का क्या सलूक है। तब शाहजादे ने
कहा कि तुमहीं पकाओ ओ खाओ। जिस बात की हमारी
भूख थी सो भूख मिट गई इतने में शाम हुई तब घोड़े पर
सवार हो शाहजादा अपने महल को गया और छबीली
बड़ी खुशी से अपने घर गई। तब इसी तरह शाहजादा रो
ज मर्रह आया करे कोई मुद्दत होगई शुबू को यहां औ
र शाम को महल में शिकार खेलना छोड़ दिया और खा
कर लोगों को भी साथ नही रक्खे। तब इसी तरह रोज शा
हजादा आया जाया करे कितने ही दिन गुजरे तब अ
मीर उमराव वजीर बड़े मानस सबने खबर पाई कि शा
हजादा एक छबीली भटियारी पे आशक हुआ है इस का
सवार वहां जाता है शाम के वक्त महल में दाखिल होता है
तब अमीर उमराव ने गोसे में बैठ वजीर से जाहर कीनी के
पातशाहजादा एक भटियारी के जाता है उस पे आशक
हुआ है हर रोज इक्की सवारी से जाता है दिन में वहां
शाम को यहां दाखिल होता है। पे शिकार का बहाना क
रता है पे बात अच्छी नही। हजरत से मालूम कर्नी चाहिये
तब ये बात सुन वजीर ने बड़ा सोच किया किये हकीकत बे
टे की बाप से किस तरह कहने में आवे जो न जाहर करें तो
भी कुछ नही। अगर हजरत पीछे सुने के वजीर से ये बातें
न मालूम हुई तो हजरत हम पे गुस्से होंगे कि यह बात हम
में जाहर न करी। पे भी कुछ नही। वजीर ने सोचा कि हज
रत किसी रोज गोसे में बैठे तो ये बात उन से जाहर

करो ।। सोई एक रोज वडी खुशीसे हजरत गोसे में बैठे थे
तव वजीर वहां पहुंचे तव वजीर हाथ जोरि हजरत से
अरज़ कीनी जो हजरत सलामत मेरा जीव वकसीस
होय तो अर्ज करों तव पातशाह ने मुवारक जवाव फर
माया और कहा कि वजीर एसी क्या वात है जो तू
जीकी दुलासा चाहता है जा तेरा जीव वकसा तू अर्ज कि
र तव वजीर सलाम कर अर्ज़ करने लगा कि पातशाह
सलामत आपका शाहजादा एक छवीली भटियारी पर
आशक हुआ है और पातशाही की कुछ खवर नही। शि
कारका वहाना करके उसके डेरा जा दिनभर उसके पास
रहता है शाम के वखत महल में दाखिल होता है और इ
क्का सवार आता जाता है एक खास खेलका खिजमतगार
संग रखता है। और किसी को साथ नहीं रखता ये वात
अच्छी नहीं है जिसवास्ते मैंने आपसे अर्ज कीनी इस वा
न का वंदोवस्त कर्नी चाहिये। इतनी वात सुनके पातशा-
ह दिल में गुस्सा किया वजीर से कहा जा तू है तो गरदन
मारने लायक लेकिन तैंने पहले अरज़ करली थी जा तुझे
तेरा जी वकसा। अव तुस्से क्या कहूं या वातका तो वंदोव-
स्त तुझे पहले से करना था। तव वजीर पातशाहसे सला
मकर वहांसे उठ दर वारमें आ वैठा। और जो दरवारके-
आने वाले आदमी थे अकलमंद सो सव वुलालीने उन
से गोसे वैठि शाहजादे ने छवीली भटियारी वात सव जाह
र करी और कहा कि इस वात की सलाह हमको वना ति
स्से शाहजादा गैर होस में है सो होश में आवे सो कहिये

इस वात को तुम्हे बुलायाहै तबइन आदमीयों ने ये सला
हदीनी कितुम पातशाहजादेका व्याह करो। तब विसे तो
छोड़देगा और अपने महल में रहैगा क्योंकि जो चीज घर
में होगी तो उसे वाहर जाना किसलिये पडेगा तब येवात
वजीरने कही ये सलाह ठीकहै तब एक अमीरने वजीरसे
अर्ज कीनी कि मह्रवान वजीर सलामत जो शख्स
लड़की की सगाई करने आताहै सो लड़की को पहलेतो न
जरनही करते हैं स्वाइत व्याह भी शहजादे का किया और
उसके पसंदन आई तो जैसा किया जैसा नकिया तब ये स-
लाह वजीरके दिलमें खूब मंजूर हुई कि ये फरमायाइस
सख्ससे कि एक सलाह तू कर तब उसने यह सलादीनी
कि शहरमें से तलास कराके पचास दूती बुलाओ अच्छे
अमीरोंके जनानखानेमें जोकि पहुंची होंय। किसी अच्छे
अमीर की खुबसूरत लड़की होय उसे किसी तरह से-
उस लडकीको खिड़की या परदेमेंसे उसे वाहरकोमुंह
आवे तो मुसव्वर उसके चहरे को देख कागज़में उतारले
गा इसलिये पचास दूती एकट्ठी कराओ तब पातशाहजा
दा जिसराहमें होकर निकले उसें दुतरफी दिवालें रख
नेकी तय्यार करो तब दिवालसे वे सबी चिपका पदेना तब
वे सबी दीखेंगी तब पीछे शहजादा पसंद करेगा तब इस
के साथ शादी होजायगी तब ये बात को सुन वजीर ने य
ही काम किया और सबको बहुत इकट्ठी कीनी कि जि
सराहमें पातशाहजादा आता था जिस राहमें दुतर्फी
तसवीर चिपकाई तब शाहजादा उसी राहमें आनिकला

ग्रोर तमाम तसवीर देखके शाहजादेने यफरमाया कि-
छबीली के समान तो एकभी नही बनी हम जाने कि-
छबीली के समान दुनिया में ग्रोर ग्रोरत नहीदीखतीहै
यह ग्रपने कह शाहजादा महलोंमें दाखिल हुग्राइ
सीतरह शाहजादा हररोज जायाकरे ग्रोर सब तरफ सब
कोदेखे लेकिन याकी नज़र किसी पर नहीं ठहरती कि
छबीली के समान ग्रोर तसवीर नही तब फेर तलाश
करतें करते एक हिन्दू चोडहेरे का ज़मीदार थाउसकी
लड़की की तसवीर उतर ग्राई। ग्रोर सबतसवीरोंसेग्र
छी। उसे लगाय दीनी तब एकरोज़ फिर शाहजादा शाम
केवख़्त महलों कोग्राताथा ग्रोर उसीतरह से तसवीर
लगादीनी तब शाजादेने तमाम तसवीर नज़र कीनीतब
ग्रोर तस्वीर नही चढ़ी जब मानसिंह ठाकुरकी लड़की
की तसवीर उतर ग्राईथी उसपर नज़र ठहरी तबतोयो
ज़ाम्टपर खड़ाकिया ग्रोर उसतसवीरको देखकर बहुत
मुश्ताकहुग्रा। जब ग्रपने दिलमें शाहजादेने कहाकिखु
शरूसी ग्रोरतहै तो ग्रोरक्या चाहिये तब शाहजादा फ
रमाते है कि मै जिस ग्रोरत कीतसवीर है उसग्रोरतसे
खुदाकेही निसबत करे तो करो। तबइतनीबात सुनिकें
हलकारेने वजीरसे ग्राकर खबर करी कि इस माफि
क ग्रातशाह ज़ादेकी मुबारकजबान निकलीहैउसी
मूजब हलकारेने कहाकि ग्रबी शाहजादा महलोंमें
दाखिल हुग्रा। तबवज़ीरने उसही वखत हलकारेसे
फरमाया किजल्दी सेत पहुंचकर उसतसवीर के ब

नाने वाला बुलाया कि तुम्हें वजीर साहब ने याद किया है आप चलिये। तब मुसव्वर मजकूर में वाही आदून हाजिर हुआ। कि मेहर्बान आज सब रोजोंमें तसवीर एकही हाजि र हुई है तब वजीर ने फरमाया कि यह तसवीर कहांसे आई और किस्कीहै सो कहो तब मुसव्वर बोला कि मे हर्बान एक चोडहेरो नगर ताको जिमीदार मानसिंह जि सकी लडकी चित्रिन कुवर है तिसकी यह तसवीर है तब वजीरने यह बात ठीक करकें पास शाहजादे के वास्ते फरमाई। कि हजरत सलामत एक मानसिंह जमीदा र चोडहेरे का है तिसकी लड़कीकी तसवीर है यह त सवीर सहजादे के नजर आई है। तब तसवीर पसंद कर यह कहा कि खुदा एसी करै कि जिस्की ये तसवीर है यह मेरे वास्ते इनाम होय तो बहतर है। तब हजरत साह बने जवान फरमाई। कि जिस वख्त जमीदार मजकूरमें सलाम करनेको हाजिर होय तब हमारे वास्ते याद दि लादीजो। तब दूसरे रोज पातशाह आम खासमें आय कर बैठे हैं तब जो कोई जमीदार या अमीर या उमराव या जागीरदार या साहूकार सब दरबारमें हाजिर हुये जसा जिस्का दरजा था वैसा आ पहुंचा पाथे जामा कि दरजा हमेशा था। जमीदार मानसिंह का तिसपर मान सिंह ठाकुर हाजिर हुआ और तस्ली मात गुजराई उसी तरह उस शख्शने ते फरमाया। हजरतने कि जिस त रह जमीदार मजकूरमें हाजिर होय उसतरह हजूरमें सब रकीओ। तबी थोडे अरसेमें उस शख्श ने अर्जकीनी

कि हजरत सलामत मान सिंह ठाकुर हाजिर है जब हजू
रने फरमाया कि मान सिंह यहां हाजिर होय। तब मानसिं
हने अपने दिलमें शक माना कि कभी तो मुझे हजूर
तयार करते ही नहीं थे और खुशी से मेरा मुजरा भी न
लिया और अब हजूर ने बुलाया आज इसका क्या स
बब है तब जमीदार मजकूर से सलाम करके हजूर के न
जदीक पहुचा तब नजदीक तख्त के हाथ जोरि कर कहा
हुआ तब पातशाह ने उससे यह फर्मायाकि मान सिंह
तेरा ही नाम है कि हां गरीवपरवर सलाम मेरा ही ना
म है तब पातशाह ने ये फरमाया कि हम तुझसे मागें
कुछ सो तू देगा तब उसने अर्ज कीनी कि हजरत सला
मत एसी मेरे पास क्या चीज है तब हजूरने फरमायाकि
चीज तेरे घरमें है वह चीज हमारे मागने लायक ही
है इसलिये तुझसे मागते हैं तब जिमीदारने कबूल कि
या कि हजरत सलामत आप फरमाइये मेरे सब कबूल
है और जोकि चीज आप मागें भी तो आपको नाहीं नहीं
और जो में इनकार भी करूं तो यह चीज मेरे किस तरह र
हेगी आप बेशक फरमाइये। तब इतना सुन पातशाहने
फरमाया कि हमारे शाहजादे को अपनी लड़की निसब
करो। तब उस जमीदार ने सलाम कर कबूल कीनी लेकिन
उस तरह यह भी अर्ज कीनी कि हजरत निसबत मेरे कबू
ल है लेकिन मेरा बड़ा भाई बाकवीला इनसे तहकीक क
र आऊं। तब पातशाह ने फरमाया कि तू पूछ कर
जल्द आजा। तब एक सवारी देकर कहाकि देर मत करी

तव मान सिंह सवार होकें अपने डेरे गया तव चार घड़ीमें
अपने डेरे पहुंच फिर महलमें गया। तव रानीने पूछा कि
महरवान आज जल्द केसें आये दरवार मेंवेठे किनहीं तव
मानसिंह बोले कि रानी आजकीवात में क्या कहूं कुछ क
हनेमें नही आनीहे। तवरानीने हाथजोड अर्ज कीनी कि म
हाराज मुझसे भी नकहो तो किस्से कहोगे तव मान सिंह वो
ले किरानी पातशाहने मुझसे फ़र्माया कि तेरी लड़कीकी नि
सवत हमारे शाहजादे से कबूल कर तवमैंने हजूरसें कबूल
कीनी किसलिये कि दुनियांका पातशाहहे जो नकबूल क
रूंतो जाने क्या करेगा तव अर्जकर डेरेको आयाहूं कि हजरत
सलामत मैं अपने कबीले भाई वंधुकोभी पूछलें तव ये फ़र्मा
या कि पूछ आओ सोइसवात कीमें तुमसे सलाह क्या करूं।
यह सुन रानीने जवाव दिया कि महरवान वडे २ राजा पात
शाहको आपसेही देतेहें जिस्सेंतो पातशाहने अपने मुहसे
फ़र्माया है तो यह वात वहुत अच्छीहे। और तुम सच्चेहोजा
नाकबूल करते आप तोनाजाने हजरत क्या करे इसवा
स्ते यह सलाह पक्की है शाहजादे से निसवत कर दीजिये
तव इतनी सुनि मानसिंह हजरत की कचहरी गये तवदर
वाजे पहुंचे तभी इसके दिलमें संदेह हुआ कि मैंने एक-
वात पातशाह सेभी कबूली और अपने घरसेंभी कबूल क
री और जो मेरी वेटी सुनेगी इतनी वात और उसने नाकबु
लकरी तो कैसे होगी इस लिये एक वेर अपनी वेटी सेभी
पूछना सलाह है तव मानसिंह दरवाजे से फिरकर-
घर गये और जाय देखेतो अपनी सहेलियोंमे वेठीहे

तब विचित्र कुंवरि राजा को देखि ठाढी होगई और राजा का बडा सनमान किया और कहा कि महाराज किस तरह आना हुआ तब राजा बेटी से कहता है कि बेटी एक बात हम से पातशाह ने फरमाई सो तुम से भी पूछने आया हूं। तब विचित्र कुवरि ने कहा कि फरमाई ये कोनसी बात है जो हजरत ने फरमाई थी सो राजा ने अपनी बेटी से बयान किया कि पातशाह ने यह फरमाया कि मानसिंह तेरी बेटी और हमारा शाहजादा दोनों की निसबत कर दो तो यह बात अच्छी है तब मैं ने दिल में जाना कि ये दुनियां का पातशाहै जो मैं ना कबूल करूंगा तो न जानें ये क्या करें इस लिये मैंने कबूल किया है तुमसे पूछने आया हूं तुम्हारी क्या सलाह है तब विचित्र कुंवरि ने कहा कि महाराज मेरे पूछने सार क्या है गाय के ताईं और बेटी के ताईं जहां राखो तहां रहैंगी जिसे आप कबूल करि आये उसे में क्यों ना कबूल करूंगी आप एक अरज मेरी तरफ़ से हजूर में करो कि हज़रत मुसलमान की और हिंदू की रसम जुदी जुदी होती है इस लिये जो मुसलमान की रसम करो तो मेरे ना कबूल है और हिंदू की रसम करो तो कबूल है तब इतनी सुनि मानसिंह पातशाह के दरबार में चला तब हजूर में पहुंचा जब पातशाह ने फरमाया कि मानसिंह भाई बंधों को पूछा था तब पातशाह से अरज कीनी की हजरत सलामत हम हिंदू हैं हमारें यह बात नहीं होती कि बेटी के बाप से शादी करें। इस बात में हमारे भाई बंध जितने हैं वे यह कहैंगे कि मानसिंह ने पातशाह को लडकी अपनी दीनी

जिसे जो कुछ मेरे होगा उस माफिक मैंही करूंगा और
आप को यही लाजिम है कि मुसलमान हो मैं क्या करने
लायक हूं मेरे तो घर में बेटी ही सो हाजिर कीनी इतनी
अरज कर अपने डेरे को गया और जो भाई बंध थे उन्हें इ
कठोरे कीने और रानी से मनसूबा कीना की ब्याह तो मैंने
हिंदू की रसम से ठहराया है और पातशाह बहुत महर
वान है लेकिन मैं तुम को यह बूझता हूं कि ब्याह इस दिल्ली
शहर में ही करें कि चौडहेरे में करें तब सबने यही सला
ह दीनी कि ब्याह तो चौडहेरे में होय तो अच्छी बात है तब
राजा फिर दूसरे दिन पातशाह के दरबार में हाजिर होय
तब वजीर से कहा कि हजरत से अरज करो कि मानसिंह
अरज करता है कि ब्याह चौडहेरे में होय तो अच्छी बात
है। और हजरत ब्याह में पधारे तब वजीरने पातशाह से
अरज कीनी कि मानसिंह यह अरज करता है कि ब्याह
चौडहेरे में होय तो अच्छी बात है तब पातशाहने फ़रमा
या कि मानसिंह बहुत ठीक कहता है हमारे भी दिल में य
ही थी। तब मानसिंह ने चौडहेरे की विदा मागी तब पात
शाह ने बहुत खुश होकर हुकम दीना तब सब कबीला
चौडहेरे में आये और ब्याह की तज वीज करने लगे और
तब लगन लिखाकर हजूर में भेजी जब पातशाह के पहुं
ची तब पातशाह ने वजीर और दीवान सब बुलाये उन से
फरमाया कि जो कुछ हिन्दू की रवाज़ है उस माफिक तुम
करो तब जो कुछ हिन्दू की रवाज थी सो करी पहले तो आ
म खास में फरस बिछा उसमें गुलाल वा अबीर का चौक पूरा

जिसंपे चोकी धरी तब निजूमी आये तबउन्होंनेकहा
कि अब इस वखत शाहजादा चहिये तिसकेहाथपेलगन
धरेंगे। तबपातशाहके खबर पहुची कि हजरत सलाम
त शाहजादे को बुलाय तब लगनहाथधरें तब पातशा
हने एक भला आदमी उस भटियारी के भेज शाहजादे
कोबुलाया। तबशाहजादा आइ हाजिर हुआ तब शाहजा
दे को चौकीपरबैठाकर लगन हाथ में रख जो कुछ हिं
दुओं कें रसमहोतीहै उस माफिक सबकरी तबलगन
लेकें शाहजादा महलमें जाय अपनी अंमा साहब की
गोदमेंधरी तब यह खबर छबीली ने सुनी कि पातशा
हजादा हजरतने बुलायाहै तबछबीलीने अपनी लोंडी
सेकहा तू किले भीतर जाकें खबर लाकि पातशाहजादा
हजरतने कैयों बुलायाहैतब लोंडी वहां गई देखेतो बडीखु
शीहोरहीहै राग रंग नौबत बजतीहै तबएक अमीरम
हलमेंसे निकला उससे पूछाकिआज पातशाहकें क्या
है सो तुम फरमाओ कि तब इतनी सुन कहा
कि बरु तेरे ताईं नही दीखता है तू किसमुल्क
से आई है सो तुझै खबरि नहीं है तब उसनेकहाकि
एमन शाहजादे का ब्याह है सो यह खुशीबखतउस
की होती है इतना जबाव लेकर छबीलीकेपास लोंडी प
हुंची कि शाहजादा इस लिये बुलायागयाहै किआजउस
की लगन आई हैगी और फलाने रोज उसका ब्याह है
इतनी सुनि कें छबीली चुप हो रही इतनेमें शाहजादा
लगन रख सवार होकें भटियारी के डेरेआयापलंगपर

बैठा तब छवीलीने अरज कीनी कि शाहजादे मैंने सुना
है कि तुम्हारा व्याह है तब शाहजादा बोला छवीली लो
ग कहते हैं तब छवीली ने कहा कि शाहजादे जो तुम्हा तु
मारा व्याह होगा तब मुझे ले चलोगे तब शाहजादेने कहा
यह क्या कहा कजाति व्याह में पांच सात रोज मेरे ताईं
लग जायंगे तो मैं तुझ बिना किस तरह से जाऊंगा तू तो
चले ही गी तब छवीली बोली कि महरबान सलामत-
इस बात का बचन दीजे तब यह फरमाया कि मेरे ताईं
खुदा की कसम है तेरे ताईं ले चलूंगा जब तेल मागरौ
व्याह की रसम थी तब होने लगी तब दो चार रोज व्याह
के रहे तब शाहजादा महलों में रहने लगा तब दो रोज हो
गये तब शाहजादा छवीली के डेरे में आया बरात की च
लने की तयारी होने लगी तब शाहजादे के पास छवीली
ने अपनी लौंडी भेजी और कहला भेजी कि मेरे ताईं
व्याह की कसम है मैं किस तरह चलूंगी सो फरमाईये
तब लौंडी ने शाहजादे से अरज गुजराई कि छवीलीने
मैं भेजी हूं यह अरज करी है कि मेरा चलना किस तर
ह होगा सो मुझ को फरमाईये तब शाहजादे ने यह फ
रमाया कि उस के वास्ते एक महाडोल भेजेंगे और-
पांच सात खास बरदार भेजेंगे सो उस महाडोल में बैठ
आवेगी जैसे बरात चले तैसे तू भी चली आइयो इतना
जबाब सुनि कें लौंडी छवीली पै पहुंची जाके ये कहा कि
शाहजादे ने यह फरमाया है जब छवीली ने लौंडी फिर भे
जी कि शाहजादे से यह अरज कर कि तमाम दिल्ली जाने है

और बरात में अमीर उमराव राजा सब चलेंगे तब राह में महा डोल देख सब हँसेंगे और कहैंगे कि छबीलीम हाडोल में बैठ अपने आशना को ब्याहने चलीहै इसलि ये इस तरह से चलना नहीं होयगा मेरा चलना इस तर ह होयगा कि जो बवरची खाने का एक ऊंट उस के क जाये में बैठ ऊपर से चादर डाल दीजेगा इस तरह को ई न जानेगा इस तरह पहुंचूंगी तब फिर लौंडी ने जाय के इस तरह से अरज करी तब शाहजादे ने एक ऊंट बवर ची खाने का भिजवा दिया तब ऊंट छबीली के डेरे पै पहुं चा और इधर से शाहजादे की निकासी हुई तब बरा त का भी कूंच हुआ और उधर से छबीली ऊंट पर सवा र हो सामिल हुई तब यह भी सूतरों से लगाय लीना त ब बरात दो चार दिन में चौडहेरे पहुंची तब वहां बाग में डेरे हुये नगर में बड़ा खुशी हुई तब राजा ने मिजमा नी भेजी तब बरात ने मिजमानी खाई तब शाम का वख़्त हुआ जब मानसिंह के आदमी आये तब उन्होंने हज रत से अरज करी कि हजरत सलामत बरीनो का ब्योहार भेजिये तब हजरत ने फरमाया बरीनो का ब्योहार लेजाई ये जो हिंदू की रसम होय जिस माफिक करौ तब बरीनेक रि आये पीछे बनी सवारी से दरवाजे गैये तोरन के ब्योहा र को चले तब वहां दरवाजे पै हजरत ने शाहजादे को घोडा अशरफी जवाहरात का भारी २ रकम का नजराना कर के नौछावरि हुई तब फिर शाहजादेने तोरन मार फिर तोरन का ब्योहार करके डेरे को आया तब छबीली

इतने में शाहजादे के डेरे में आई किसलिये कि इसके दि-
ल में यह अपसोस हुआ कि शाहजादा तो अपना व्याह
करेगा तब अपने महलों में दाखिल रहैगा तब मेरी
क्या पर वाह रहैगी इसलिये कुछ उपाय करना चाहिये
तो भला है। तब शाहजादे ने कहा आवो महतरानी बैठ
जा तब छबीली ने कहा शाहजादे आपना बैठोंगी तो स
ही पर मैं ने एक बात सुनी है सो मुझे फ़िकर हुई है तब शा
हजादे ने फरमाया कै क्या बात सुनी है सो मुझसे कह दे
तब छबीली ने कही पहले तो मैं नही कहूंगी हुकम होय
तो आप की व्याहता को देख आऊं पीछे आपसे कहौं
गी तब शाहजादे ने कहा कि तुझे कौन जाने देगा आख
र यह भी छोटा बडा राजा है तब याने कहा शाहजादे इस
तरह जाऊंगी सो मुझे कोई भी न रोकैगा तब शाहजादे ने
कहा कि तू जा तुझे मैं मने नही करता हूं तब शाहजादे
का हुकम लेके छबीली ने एक माली बुलाया तब माली
हाजिर हुआ और कहा उसने साहब फरमाइये सो करूं
तब छबीली ने कहा कि यह तो एक रुपैया ले एक बहुत
खस बोई के फूलों का हार बना कैं एक छबरिया में धरके
जल्दी भेजदीजो इतने में आधी रात का वख्त हुआ और
छबीली उस हार को लेकें अच्छे जरी के कपरे सेटक कैं
और दो मसाल आगे पीछे लेकर मानसिंह राजा के मह-
ल को चली और जब दरवाजे पर पहुंची तब दर वा
जे के चौकीदार थे उन्होंने कहा तू इस वखत कहां
जाती है और कौन है। तब छबीली ने कहा मुझे रोको

मन में हजूर के खास बागकी मालिनहूं। मैंहजरत के हुकम से फूलोंका हार भीतर को लाईहूं सो फेरान के बखत यहीहार पहले पातशाह का चढाया इसका ही चढ़ेगा पीछे फेरा लीजिंगें। तबएकने कहा कि येठीकक हतीहै इसको मत रोको तब भीतर पहुंची वहां जाय देखेतो विचित्रकुवरि एक पलंग पर पौढ़ीहै और द सबीस सहेली हैं सो कोई पंडित बैठी है कोई सिराने कोई खडीहै कोई पेचबरदार है कोई पानदान लियेको ई अतरलियेखडीहै। एसी छबि देखि छबीली बे होश होगई और दिल में कहने लगी कि जिसराज शाहजा दा इसे देखेगा तबमेरी क्या परवाहहैगी और ऐसी बे खबर होगई कि वहहार गलेमें नडालागया आगेंरख दिया। तब विचित्रकुवर की महलारी ने कहीकितू के सीमालिन है सोन का हार याई के गलेमें नडाला और जमीनपर रखदिया। तबछबीलीने कहा मैं रानी साह ब अबलों तो यह राजाकी बेटी ही अबहुई पातशाह जादी अब अपना हाथ इनके सिरपर किसतरह लेजा ऊं तब यह सुनके विचित्र कुवरिके गलेमें डाला औरछ बाली की डलियामें आरवेंती महोर डाली तब छबीली विचित्रकुवर को देख रोने लगी तब डलिया सौंपि रानी ने कहा कि हे बदबखत मालिन मेरे दरवाजे सुगन सात तू आसूं क्यों डालती है। तब छबीली ने कही कि रानीजी साहब में नहीं रोती यह जो तुम्हारे चिरा कोमेंतेलजलताहै तिसका धूआं मेरी आखोंमेंजाताहै

इससे पानी परता है। तब रानी ने पूछी मालिन तुम्हारे क्या
जरता है तब याने कही कै रानी जी साहब हमारे वहां तो
साठ सत्तर रुपैया को तोले वारा अतर जरता है तेल का
जिकर है। तब इतना जवाब सुनि के रानी बहुत सोच में
भई। कि जिन्हों की मालिन की यह सनारवत है तिन्हों के
पातशाह जादे की कैसी सनारवत होयगी अब यह व्याह
राजा ने सब किया ॥ तब इतना कह छबीली ने विदा मां
गी कै रानीजी साहिब मुझको डेरे को हुकम होय तो आप मु
झे सीख दीजिये ॥ ये राति पिछली पहर एक रही है अच्छी
तरहे तू डेरे को जा तब छबीली वहां से चली और राह में एक
मन सवा कसो चहिये दग वाजी का तब यह बजार में जाइ
कें डलिया में दो दाना डाल लीने और जितनी पोसाख थी
सो सब दूर कीनी और अपनी बद सूरत बनाय कें शाह जा
दे के पास गई तब शाहजादे नें पूछी कै छबीली वहां तू गई
सो खबर मुझ से कह दे तू क्या लाई और हमारी व्याहता
की क्या सिकल है और तेरी बद सूरत किस तरह से हुई
तब छबीली ने कहा कि शाहजादे जा पना एक दो दाना
तो मेरी डलिया में डाले हैं और आपसे में क्या कहूं कुछ
कही नहीं जाती है तब शाहजादे ने कहा कि मुझ से नहीं
कहैगी तो किस से कहैगी तब कहा कि इस तरह से ती
इस शादी से तेरी जान गई और आप के पीछे मेरी भी
जान गई तब शाहजादे ने पूछी किस तरह मेरी जान गई
सो तू मुझ से कह दे तब छबीली ने कहा कि मेरे कह
ने का आप को इतवार है तब शाहजादे नें कहा कै तेरा

इतवार है तब छबीली कहती है कि सुनों शाहजादे जब
पातशाह के लड़का होता है तब सब को यह नजर आता
है कि पातशाह का रावा रक्खैगा इस से इन्हों ने यह विचा
री कि इस को अपने हाथ तो नहीं मारना इसलिये इसका
व्याह ऐसी जगह करना जिस से आपही मरि जायगा ॥
सो तुम्हारी व्याहता की तो यह सिकल है मानो सर्पिनी औ
र उस की नजर ऐसी है जिस की तरफ़ देखे सोई जान से
जुदा हो जाय ॥ तब शाहजादे ने कहा कि छबीली तू किस
तरह बची मेरी उसकी जब चार नजर भई तब मेरी बद
सूरत भई ॥ मैं इस तरह से बची तब शाहजादे ने कहा कि
कुछ ऐसा उपाय करना चहिये जिस से मेरी जान बचै ॥
तब छबीली ने कहा किस तरह से बचोगे ऐसा सकस को
न है जो अपनी औरत की तरफ़ देखैगा नहीं तब फिरि
शाहजादे ने कहा कि कुछ तो इलाज कर जिस से मेरी
जान बचै तब छबीली ने कहा कि मैं इलाज बताऊं सो
करोगे तब शाहजादे नें कहा मुझै कसम खुदा की है तू
कहैगी सोई इलाज मैं करूंगा तब छबीली ने कहा कि
तुम यह बाहना करो कि मेरी आंख दूखती हैं इसलिये
आंखों से पट्टी बांधि रक्खो ना उसको देखोगे ना मरोगे
यह इलाज तो मुझै याद है तब शाहजादे ने कहा यह बात
तो ठीक है यही मेरे मन में थी तब छबीली ने अपनी ओ
ढनी फ़ाड के शाहजादे की आंखों से पट्टी बांधि दीनी ॥
और छबीली ने कहा मुझै डेरे जाने का हुकम दो तब शाह
जादे ने कहा तू डेरा को जा तब छबीली तो अपने घर में

आई और शहजादा पुकारने लगा के हाय मेरी आंख दुखती है इतने में आधीरात गुजरी है और तब राजा के नेगी आये और पातशाह से अरज पहुचाई के हजरत सलामत शहजादे को भेजिये फेरन का वखत हुआ है सो जल्दी चलिये तब हजरत ने फरमाया के शहजादे को लेजाओ और जिस तरह हिंदू की रसम है उस तरह करलाओ तब शहजादे को लेचले और जितने हजूर के लोग थे सो सब चले तब वहां निजूमी पंडित व्याह कराने को बैठे थे सो उन्होंने कहा कि शाहजादे आंखों से पटी किसवास्ते बांधी है तब शहजादे ने कहा कि हमारी आंखें दुखती हैं तब एक सकस बोला कि हांजी व्याह में तो आंखें दुखती हैं बात तो सांची है दुखती होंयगी॥ तब इतने में विचित्र कुंवरि को लेने आये तब लायके शहजादा और विचित्र कुंवरि दोनो बराबर बैठारि कें हाथ में हाथ देकर फेरा सात दिवाये॥ जब फेरा ले चुके तब कंकन खोला तब शाहजादे को राजा ने कुछ दिया पीछे व्याह हो चुका तब शहजादा अपने डेरा में आया तब दूसरे रोज पलका की ओहार हुआ तब राजाने दायजे को सरंजाम दिया और पीछें पातशाह को और अमीर उमराव दीवान सब को नजराना दिया राजाने हाथ जोरि हजरत से मनुहारि कीनी पातशाह के पैरों पड़ गया तब हजरतने बहुत स्याबासी दीनी पीछे सब ओहार कर अपने डेरा गये पीछे हजरत ने गौंडा का ओहार किया सब मुलक के

मंगत जन आये तिन को बडा पैसा लुटाया पीछे दो रोज औ
र रहे फिर शाहजादे को कुछ और दिया राजा ने फिर
व्याह करके पालशाह ने दिल्ली को कूंच किया दो चार
दिन में दिल्ली दाखिल हुए तब आगे गोनी करी शाहजादा
और विचित्र कुवरि महलों में दाखिल हुए जब शाम का वख्त
हुआ तब शाहजादा एक गोसे की जगह में पौढा था तब
विचित्र कुवरि सोलह सिंगार करके शाहजादे के पास गई
आगे देखे तो शाह जादा आंखों से पट्टी बांधि पलंग पर पौ
ढ रहा है तब इस को खडे २ घडी चार गुजरी शाहजादा न
हीं बोला तब विचित्र कुवरि आपी बोली कि शाहजादे पना
ह मैं कहां सोऊं तब कहा कहीं पाइंत पर रहो तब फजरका
वख्त हुआ तब शाहजादा उठ के महल से वाहर आया औ
र घोडे पै सवार होके चला तब दरवाजे पे पहुंचा तब आं
खों से पट्टी खोल के जेब में रक्खी और यहां से जाय कर
कबीली के डेरा में दाखिल हुआ तब इसी तरह पांच सात
महीने गुजरे तब एक रोज विचित्र कुवरि सबेरे ही अपनी
सास के पास आई और सलाम कर हाथ जोरि ठाडी रही
तब सास ने कही आवो वहू बैठो आज कैसे तुम्हारा आ
वना हुआ तब याने कही बाईजी साहिब तुम्हारे बेटे की
आंखें कैसें दुखती हैं सो मुझ से कहिये किस लिये कि
इतनी मुद्दत गुजर गई न तो मेरी तरफ देखते हैं और न
मुझ से बोलते हैं आंखों से पट्टी बंधी रहती है सो यह
क्या सबब है तब सासने कही ए वहू तो तो तुम्हें आने ही
वनाई थी तुम्हें मालूम नहीं है तब कहा कि एक छ-

वीली भटियारी है तापै शाहज़ादा बहुत आशिक है। सो उस ने कछू दगा बाजी करी होयगी तिस सवब से नहीं बोलता होगा॥ तब विचित्रकुंवारि ने कहा इस बात की मुझै मालूम नही थी जो मैं भानसिंह की बेटी होंऊंगी तो एक पहर में शाहज़ादे को ले आउंगी ये क्या बात है तब सास को तसलीम कर सीख मांगि अपनी राह में आयकें एक नाज़र बुलाया नाज़र आइके हाज़िर हुआ सलाम कर खडा रहा तब विससे कहा तू राजो गूजरि के डेरा जा और उस से कहियो कें तू अपने पहर ने का जेवर दे वा पोशाक और एक बहुत बेस दहेंडी छव- रिया वा ईंढई देउ॥ और एक असरफ़ी किराई की लेउ तब नाज़र ने जायकें वा माफिक गूजरी से कही अरु असरफी उस को दीनी तब नाज़र के कहे माफिक गू- जरी ने जेवर पोशाख दहेंडी छवरिया सब चीज लेकें म हल में आई॥ तब विचित्र कुंवरि ने अपनी पोशाख को उतार धरी और गूजरी की पोशाख पहन के सिर पै दहेंडी धर सास के पास चली तब दरवाजे पै पहुंची तब नाज़र से कहा तब ताईं इधर से मैं आऊं जब तक किसी को भीतर न जाने दीजो तब नाज़र ने कहा जो हुकम कोऊ नहीं आने पावैगा तब वहां से चली अपनी सास के पा स पहुंची तब सास बहू की तरफ़ देख अपने दिल में कहने लगी कि यह नई सी गूजरी आज कहां से आ ई है॥ तब याने सास को सलाम किया और कहा कि बाई साहिब दही लेलीजिये॥ तब पादशाह ज़ादी ने

फरमाया कि तू नईसी गूजरी कहां से आई है ॥ तब याने
कही कै मुझै तो यहां हीं आपके तलाव नीचे मुद्दत गूजरी है आ
पसुरु को पहचानती नहीं हौं तब रानीने कही हम तो नहीं प
हचानती हैं ॥ तब इसने मुसकायकै कही कै मैं तो आपकी
बहू हों तब इसकी तरफ देखकें मुसकराती भई तब तो
पातशाहजादी ने कहा बहू अब मैंने जानी तुम सुकर पा
तशाहजादे को लावैगी तब गूजरीने सास को सलामकर
अरज कीनी शाहजादे के पास जाने को ॥ कबित्त ॥
मेरी तो सरम सब तुम्हारे खुदा के हाथ आवने न पावे
कोई खबर दार डेरे की ॥ मैं तो निकसि चली इसही शाह
रवीच जहां सेती आंखि लागी प्यारे पीव मेरे की ॥ मो हुते
सरस वह कौन है जिन दई छाती रस मांनी चाप दादे हू
बडेरे की ॥ ल्याऊं शाहजादे को लगाऊं नहीं नैक बार
सास सेती अरज करै रानी चौडहेरे की ॥ १ ॥ किस्सा
रानी अरज सास सेती करकें यहां से चली ॥ कबित्त ॥
घर से निकस चली गली सब गाहि बेको देखा सब श
हर एक पहर के समान मैं ॥ चली गई वहां जो पीया वि
रमाया जहां रमनसाह शाहजादा बैठाया इमान में ॥
नभ भरी भटियारी खिजमत करने वाली रहैं नहीं टारी
और जोबन के गुमान में ॥ लेकें रहैंडी हाथ करिके वि
कट बात देखें करि लात जाय पहुंची है दिवान में ॥ २ ॥
किस्सा ॥ जब गूजरी वहां सराय के दरम्यान शाहजादे
के रोबरू पहुंची तब बोली गूजरी दही लेहु रही लेहु ॥
तब शाहजादे की नजर इसकी तरफ हुई तब इसकी तरफ

देख के कहा गूजरी यहां आओ तुम्हारा दही हम लेंगे तब गूजरी देख कें बहुत खुशी हुई तब गई और फरमाया कि बैठ जा तब गूजरी बैठ गई और दहेंडी शाहजादे के आगे रख दीनी और छबीली उस वखत हाजिर थी सो गूजरी देख इस की तरफ गुस्सा हुई तब छबीली गूजरी से कहती है॰ कवित्त॰ गोरस ले आई किधौं बड़ी है बड़ाई पाई दई है दिखाय आनि में डही पैटेरी है॰ दही लेहु दही लेहु मही लै हजूर भई खोलि दिया घूंघट करी नकानि मेरी है॰ कै तो तू बिधैना किधौं बिद्या पढी कामरू की कै तो मेरे आफरमाहू कूंजरे की चेरी है॰ मानत निसंक धौ निसंक है कें देत ज्वाब दूरि होय गूजरी गवारि जाति तेरी है॰ ४॰ इतनी बात छबीली ने गूजरी से कही तब गूजरी जवाब देती है सुनि भटियारी का यह काम है॰ कवित्त॰ आवै जो सिपाई तो पैसा हू को मोल लेहि कौन में बिछावै खार काम करै राजी का॰ राह रोक खडी रहे चूले पास पडी रहै चोरी ही में नीति रहे मीत नाहि गारी का॰ बसत हैं लोग एक एक तें सरस आनि चानि नहीं छाडे जैसे मारती है यारी का॰ जाति कम जाति कहा किसू का न मानती है ऐसा है तुजक दारी तुज भटियारी का॰ ५॰ किस्सा॰ तब इतनी बात गूजरी ने छबीली से कहि के शाहजादे से कहती है कि महरवान मेरा दही लैना होय तो लीजिये और न लेना होय तो मेरा दही मेरे हवाले कीजिये इस भटियारी से किस वास्ते हुज्जत करवाते हो तब शाहजादे ने कहा कि गूजरी अपने दही

का मोल कहौ झगडे से क्या काम है तब गूजरी दही का
मोल कहती है ॥ कवित्त ॥ मोल तो अमोल मोल लाख
टका चाहती हौं खायगा जो वही जिसे स्वाद मेरे दही का।
मैं तो जानती हूं तुझे तू खाने वाला छाछि का है मेरे जानि
तुझे तो सवाद लगा याही का। घर की न खांड खाय-
गुर को पराये जाय राति दूखैं आंखि धौंस डर मेरे दही
का ॥ साह थे बुलाय फिरी आनि कें सलाम किया सुनो
शाहजादे यही मोल मेरे दही का ॥ ६ ॥ किस्सा ॥ इतनी
सुनि कें भटियारी बहुत गुस्सा हुई औ गु[illegible] हो कें
गूजरी से कहती है ॥ कवित्त ॥ ऐसे [illegible]ी भरी भैंसा
मोल चाहती है सुनि वे ढीठ गूजरी कितक तोहि आनी
है आनी न परत है दिवानी किधौं देखि शाहजादे जू को आ
य मन लल चाती है। छांह सौं करत मोह तोरन सकन नैन
झारि कें उगौरी ठौर ठाडी अरसान है ॥ आंखैं रहीं घूघरी
कहीं किसी की न मानती है बेचती है दही किधौं आप
ही बिचाती है ॥ किस्सा ॥ इतनी सुनि गूजरी छबीली से जवाब
देती है ॥ कवित्त ॥ राह राह चली जा कुराह मे कायर होत जे
सें तो पराई गाय भाहें बिच आती है ॥ चोर तो तब ही लौं
भला साह नाहि पहुंचे आन कहती हौं पुकारि तू अनाद
रगा खाती है ॥ मुगल पठान रजपूत सब जानते हैं इ
स ही शहर बीच तू ही इतराती है ॥ बेचती हौं दही दि
ल पाक या बजार बीच गसतां गर वानी तू दिवानी भई जा
ती है ॥ ८ ॥ किस्सा ॥ इतनी बात गूजरी भटियारी से
कहि कें शाहजादे से अरज करती है जो तुम्है मेरा दही

जाय रानि दूरैवैं आंखि धोस चलत न अपने सा है ॥ कहता
है रमन साह रानी चौड हेरे की से गूजरी तू रेंसी नेरा गूज
री धों कैसा है ॥ ११ ॥ किस्सा ॥ इतनी कह गूजरी यहां से
चली तब शाहज़ादे के दिल में आई कें गूजरी तो चली इस
से कुछ पूछी नहीं तब शाहज़ादे ने कही गूजरी खड़ी रहो
एक बात तुम से पूछते हैं तब गूजरी बोली के फरमाइये
तब शाहज़ादे ने कही तुम कहां रहती हो और किस जगह
तुम्हारा डेरा है। यह सुनि गूजरी ने कही कि शाहज़ादे मेरा
डेरा पांडुत की सराय में है सब कोई जानते हैं। इतनी कहि
के गूजरी चली सो अपने महल में दाखिल हुई। तब गूज
री की पोशाख तो उतार डारी और अपनी पातसाही पोशा
ख पहर लीनी तब दूते में घरी छः दिन पिछला रहा तब शा
हज़ादे ने घोड़ा पै जीन धरवाया तब छबीली बोली के शा
हज़ादे पना अभी तो घरी छः दिन बाकी है अबही ते कहां
की जीन धरवाया तब शाहज़ादे ने कहा आज हम चांदनी
चौक की सैर करने जाते हैं जब सवार होय के चले सो चां
दनी चौक में पहुंचे तब उहां खिज़मतगार से कहा के बो
बुज़रक खड़ा है सो उस से तू पूछ ले के पांडुत की सराय
किस तरफ है तब उस से खिज़मतगार ने पूछी के बड़े मि
यां पांडुत की सराय किस तरफ़ है तब उसने कहा के रे मि
यां इस दिल्ली शहर में हीं जनम हुआ इस में ही बूढ़ा हुआ
लेकिन पांडुत की सराय मैंने आज तक नहीं सुनी तब खि
ज़मतगार बोला हमने आज सुनी है तब उसने कही बाबा आगे
पूछ तब यहां से आगें चले तब ऐसें ही एक सकते फेर पूछी

कि सिपाई यहां पाइत की सराय किस तरफ है। तवउस
ने जानी ये मेरी मसकरी करता है तव उसने कहा ओबे
वकूफ पाइत की सराय नैंने न वसाई तेरे वापने न वसाई
पांइत की सराय इस तरफ कहां से आई। इतनी सुनि
शाहजादा चुप होरहा। अरु जी में जानी के ये कछू चिराहे अ
वकैं तो याने गाली दीनी अरु आगे किसी से पूछैंगे तो तल्ल
वार मारैगा। अब इस जगह से चलो तव फेर छबीली के डे
रे आये तव एक घरी दिन रहा तव सवार होके डेरे चले तव स
रवाने पर पहुंचे तभी जेव में से पट्टी काढके अपनी आखें
से बांध लीनी तव महल में दाखिल हुए इतने में सिंगारकर
रानी शाहजादे के पास पहुंची अरु अपने जी में जानी के
आज तो शाहजादा मुझसे बोलेगा। तव ये सलाम कर खड़ी
रही तव याकी खड़े २ चार घरी गुजरी तव याने अपने दि
ल में कही जारे मूरख आज भी कुछ नहीं समझा। तव या
ने कही शाहजादे मैं कहां सोऊं तव ये बोला कि पांइत पर सो
फिर फजर का वखत हुआ तव बाहर निकल पट्टी खोलि
अपने जेव में धर घोड़े पै सवार होय छबीली के डेरा दा
खिल हुआ। इतने में मानसिंह की बेटीने नाजर बुलाया त
व हाजिर हुआ सलाम कर खड़ा रहा जव नाजर से कहा तू
हजरत के पास जा दरोगा से कहियो तवेला में से एक वखु
त अच्छा घोड़ा जीन कसवा कें और तो सह रवाने से वहु
त उमदै पोशाख अरु ढाल तरवार तरकस कमान ले
कर जल्दी आजा। तव नाजर ने कहा जो हुकम तव जाय
के वहां से घोड़ा और पोशाख हथयार सव लाइ हाजिर कीने

तब मरदानी पोसाष पहरि सवार होने की तयारी करी है अ
र नाजर से कहती है किसी को भीतर न जाने दीजो जब घरी
छ : दिन रहा तब सवार होय घोडे को कुदावती जहां शाहजा
दा या उसी सराय के दरवाजे पै जाय घोड़ा खड़ा किया जब
शाहजादे दरबानियें ने कही आगें कहां जाते हो आप कहां
रहते हैं। तब उसने कहा तुम्हारे शाहजादे से जाय अरज
करो कि एक विचित्र शाह आपके मिलने के वास्ते आया
है। तब दरबानी ने कही अब तो मिलने का वखत नहीं है।
तब दरबानी के एक कमची मारी तब तो भाज कर डोढी प
र जाय अरज करता है॥ कवित्त॥ दौड दरबानियें ने पौरि ते
पुकार करी साहब भरी का शाहजादा एक आया है। दस्त
न की छांह खडा खुरी करवाता है ऐसा तुरी तेज मानों सिं
धु मथि लाया है॥ भला असवार सिरदार है पठैन अच्छा रे
खने में खूब मह बूब साचन आया है॥ ऐसा जोर जालिम
जुबाव नहीं दैन देत हाल दरसाल रमन शाह न बुलाया है
॥ कै कोई सकत आया है उसने मुझे कोड़ा की मार दीनी है॥
इतनी सुनि पात शाह जादा बहुत गुस्सा होय कर ढाल
तलवार मगाय कर बांधि लीनी और बाहर निकल कहा
कि जिसने मेरा चाकर मारा है उस का सिर तलवार से उडा
ऊंगा॥ जब उस असवार के साम्हने आया और चार नज
र हुई तब गुस्सा तो जाता रहा और साहब को सलाम कर
उठे अरु दिल में बडा होफ हुआ कै कल एक गुजरी भी आई
थी सो उस की तारीफ करूं या इस जवान की तारीफ करूं
कवित्त॥ कीनी है सुजाल मति भूल रहे देखि गनि कित कौं

सिधारे किस बात का से दाया है ॥ खेल ने सिकार में तो आ
या यार तेरे पास तभी खिलवार महसूस कर पाया है ॥
दोउ सिरदार दोउ हिलि मिलि एक भये कीनी ततबीर
घोडा आप हू मगाया है ॥ गले बीच डाल उरि हाथ सम
सेर लैकें पांव हीं पयादा शाहजादा उठि धाया है ॥ २३ ॥
किस्सा ॥ इतनी बात सुनि शाहजादा विचित्र शाह के आगें
पांव पयादा उठ चला तब विचित्र शाह ने अपने दिल में
विचारी आखर तो में इस की औरत हूं ये बात लाजिम न
हीं है कि मेरी हाजिरी में चले तब घोडे से उतर शाहजादे से
कहा कि शाहजादे आप तो सवार हूजिये अरु में पयादा चलूं
गा इतने में शाहजादे का भी घोडा आय हाजिर हुआ तब दो
नीं सकल सवार होकर सिकार को चले तब चलते २ सिकारगा
ह में पहुंचे तब एक मृग नजर आया तब इन्होंने उस के पीछे
घोडा डाला तो किस तरह से जाता है ॥ कवित्त ॥ दोउ असवा
र दोउ अम्बन चढे हैं बडे बडे मप मोकल महीप सब दे
श के ॥ खेलत सिकार भाला घाला हरवर दिये कुरे शाह
जादे दोउ दिल्ली नरेश के ॥ मारा मृग खेद करि के हरि
ना बेध लिया पूरि पेज्ञ यारी खिलवार यारी वेस के ॥ सं
ग ही से वद के विचित्र शाह हाथ दिया किनी ततबीर बार
लागी नाही नेस के ॥ २४ ॥ किस्सा ॥ जब कि यह हिर
न घायल हुआ तब एक नील के खेत में जाय पडा ॥
जब ये दोनों वहां पहुंचे तब शाहजादा घोडा पर से उतर
पडा और यह भी उतरी सो इस के पांव में खोरा लगा त
ब उस के पांव को देख करके शाहजादा बहुत अंदेसा